सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 70, नई दिल्ली, मंगलवार 20 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है... पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है...!!!

04 दिल्ली पुलिस अकादमी, वज़ीराबाद परिसर में भव्य पासिंग आउट परेड का आयोजन
06 हरित ऊर्जा उत्पादन के नए आयाम
08 प्रियंका सेनापति से पुलिस गहन पूछताछ कर रही है

परिवहन विभाग मुख्यालय में कार्यरत डीटीओ हेडक्वार्टर और आटो शाखा में बड़े पैमाने पर धांधली की खबरें

संजय बाटला

परिवहन विभाग मुख्यालय में सीधे जनता से संबंधित चार मुख्य शाखाएं कार्य कर रही हैं

1. डीटीओ हेडक्वार्टरः-

A. इस शाखा में 3500 किलो से कम वजन के मालवाहक वाहन जिन्हें दिल्ली की सड़को पर चलने के लिए परमिट की आवश्यकता नहीं है का पंजीकरण,

B. बारह सवारी से ऊपर के सभी हल्के, मध्यम एवं भारी वाहनों का पंजीकरण, एच.पी.ए., एच.पी.टी., हस्तांतरण, एनओसी के कार्य

C. मालवाहक सभी हल्के, मध्यम एवं भारी वाहनों का पंजीकरण, एच.पी.ए., एच.पी.टी., हस्तांतरण, एनओसी के कार्य

D. वाहनों की बाडी में बदलाव के आदेश,

E. वाहनों को नोटिस एवम्उनके पंजीकरण को अस्थाई एवम्स्थाई रद्द करने के आदेश इत्यादि किए जाते है।

2. आटो शाखाः- तीन पहिया से संबंधित सभी श्रेणी के वाहनों का पंजीकरण, एच.पी.ए., एच.पी.टी., हस्तांतरण, परमिट एवम्एनओसी के कार्य इत्यादि

3. टैक्सी शाखा :- चार पहिया एवम्6 पहिया 4 सवारी से 12 + 1 के सभी सवारी वाहनों की संबंधित सभी श्रेणी के वाहनों का पंजीकरण, एच.पी.ए., एच.पी.टी., हस्तांतरण, परमिट एवम्एनओसी के कार्य इत्यादि

4. एस.टी.ए. शाखाः- सभी व्यवसायिक वाहनों के लिए नियम, अधिनियम, कानून और पालिसी के निर्माण के साथ 13 +1 से अधिक सभी श्रेणियों के सवारी वाहनों और 3500 किलो से अधिक सभी श्रेणियों के मालवाहक वाहनों को परमिट जारी करना और मोटर वाहन नियम के तहत वाहनों को नोटिस जारी करना एवम्उनके परमिट को अस्थाई एवम्स्थाई रद्द करने के आदेश जारी करना

यह चारों वह शाखाएं हैं जहां दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधि में पंजीकृत सभी वाहन मालिकों को अपने वाहनों के कार्यों के प्रति आनलाइन आवेदन प्रक्रिया के बावजूद आना - जाना पड़ता है।

परिवहन विभाग मुख्यालय में स्थित इन कार्यालयों में से दो कार्यालयों डीटीओ हेडक्वार्टर एवम्आटो शाखा की कार्यप्रणाली पर पिछले कुछ महीनों से लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं और आला अधिकारियों को शिकायतें तक दर्ज कराई गई हैं पर उसके बावजूद इन दोनों शाखाओं में दिन प्रतिदिन धांधली बढ़ती ही जा रही है और कोई आला अधिकारी कार्यवाही करने को भी तैयार नहीं हैं शायद यह दोनों डीटीओ की पकड़ और पहुंच आला अधिकारियों के साथ दिल्ली सरकार तक बनी हुई है। **यह बात हम अपनी तरफ से नहीं लिख रहे यह बोली स्वयं डीटीओ द्वारा बहुत से वाहन मालिकों को बताई गई है। इसके अलावा इन दोनों डीटीओ का आटो फाइनेंसर, आटो माफिया एवम्वाहन डीलरो से भी सीधा पारिवारिक संबंध जग जाहिर है।**

आटो शाखा से पुराने आटो के स्थान पर नए आटो खरीदने के लिए जारी की जाने वालीं एल.ओ.आई. पर धांधली की बड़ी खबरें आ रही हैं पर कोई जांच को तैयार नहीं अर्थ क्या उच्चाधिकारी खास तौर से उपायुक्त आटो की खुली शय है ? उसके अलावा आटो ड्राइवर अपने कार्यों के लिए भी परेशान हैं और भटकते नजर आते हैं।

डीटीओ हेडक्वार्टर में पंजीकृत होने वाले 3500 किलो तक के अधिकतर वाहन भारत सरकार द्वारा अधिकृत जांच एजेंसी एवम्परिवहन विभाग द्वारा जारी स्टेट अप्रूवल के आधार पर निर्मित नहीं है और सभी जानकारी डीटीओ हेडक्वार्टर को होते हुए भी पंजीकृत कर रहा है और प्रवर्तन शाखा को इस पर कार्यवाही के लिए बताने और कार्यवाही करवाने को भी तैयार नहीं हैं। इसके अतिरिक्त जब डीटीओ हेडक्वार्टर की इच्छा होती है तब वाहनों के लिए आई एप्लीकेशन कार्यों को रोक कर बैठ जाता हैं और जब इच्छा करती हैं करने लग जाता हैं। वाहनों में एचपीए करने के लिए भारत सरकार के मंत्रालय सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग द्वारा जारी प्रपत्र के स्थान पर पुराने जमाने के फाइनेंसर द्वारा जारी फार्म का प्रयोग कर फाइनशियर्स को फायदा पहुंचाने में सलग्न है फिर भी आला अधिकारी है चुप।

अब आप स्वयं फैसला करे की ऐसे अधिकारियों के पदों पर विराजमान होने से जनता के कार्य संभव है या बिचौलिए के ?

भारत में सड़क सुरक्षा एक गंभीर चिंता का विषय है, जहाँ सड़क दुर्घटनाओं की संख्या चिंताजनक रूप से अधिक है। बढ़ती आबादी और बढ़ते वाहन स्वामित्व के साथ, सुरक्षित सड़कें सुनिश्चित करना मानव जीवन की रक्षा और चोटों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। सड़क सुरक्षा का मतलब सिर्फ़ ट्रैफ़िक नियमों का पालन करना नहीं है; यह एक ज़िम्मेदार और रक्षात्मक ड्राइविंग संस्कृति को अपनाने के बारे में है। सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देकर, हम अपनी सड़कों पर दुर्घटनाओं, चोटों और मौतों की संख्या को काफी हद तक कम कर सकते हैं, जिससे पैदल चलने वालों, साइकिल चालकों और वाहन सवारों सहित सभी सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए एक सुरक्षित वातावरण बन सकता है।

भारत में सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए, कई प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है, जिसमें यातायात कानूनों का सख्त पालन, सड़क के बुनियादी ढांचे में सुधार और सुरक्षित ड्राइविंग प्रथाओं के बारे में सार्वजनिक जागरूकता को बढ़ावा देना शामिल है। इसके अतिरिक्त, चालक प्रशिक्षण कार्यक्रम और वाहन सुरक्षा मानक दुर्घटनाओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। एक साथ काम करके, सरकारी एजेंसियाँ, कानून प्रवर्तन और जनता एक सुरक्षित और अधिक जिम्मेदार ड्राइविंग संस्कृति बना सकती हैं, जिससे अंततः लोगों की जान बच सकती है और व्यक्तियों, परिवारों और पूरे समाज पर सड़क दुर्घटनाओं का आर्थिक बोझ कम हो सकता है।

यह जानकर खुशी हुई कि माननीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी के कुशल नेतृत्व में संबंधित मंत्रालय ने सभी मोर्चों पर पहल की है, खास तौर पर अंधे और दुर्घटना का कारण बनने वाले स्थानों की पहचान करने और उन्हें ठीक करने पर तेजी से ध्यान केंद्रित किया है। मैं आग्रह करूंगा कि सड़कों पर कैमरे लगाने पर अधिक ध्यान दिया जाए, न केवल तेज गति से वाहन चलाने को हतोत्साहित करने के लिए बल्कि लेन ड्राइविंग के अनुशासन को विकसित करने के लिए भी।

शंभू सिंह, आई. ए. एस. सचिव शिपिंग भारत सरकार (सेवानिवृत) शिपिंग मंत्रालय

आदरणीय , आपकी जितनी प्रशंसा करू उतनी कम है , विपरित परिस्थितियों में अल्प समय में आपने अपने परिवाहान विशेष दैनिक समाचार पत्र का प्रचार - प्रसार ही नही बल्कि परिवाहन सम्बन्धी नयी - नयी जानकारियाँ प्रदान कराकर देश के एक्टिव समाज सेवियों को प्रशिक्षित भी कर दिया परिवाहन विशेष देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र का जनपद - इटावा , उत्तर प्रदेश में प्रचारित- प्रसारित करने बहुत इच्छुक हूँ। आपके निर्देश की प्रतिक्षा में सादर आभार सहित

- इटावा उत्तर प्रदेश से मांग

शिव महापुराण कथा के दौरान कई रास्तों पर यातायात रहेगा बंद; पढ़ें एडवाइजरी

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने शिव महापुराण कथा के चलते एडवाइजरी जारी की है। 20 से 27 मई तक बुराड़ी के निरंकारी ग्राउंड पर कथा होगी जिससे यातायात प्रभावित हो सकता है। कई मार्गों पर नो पार्किंग रहेगी और जरूरत पड़ने पर कुछ सड़कें बंद भी की जा सकती हैं। यात्रियों से वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने और सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता देने की अपील की गई है।

नई दिल्ली। दिल्ली के बुराड़ी स्थित निरंकारी ग्राउंड पर 20 मई से 27 मई तक आयोजित होने जा रही शिव महापुराण कथा के चलते दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। ट्रैफिक पुलिस के अनुसार इस धार्मिक आयोजन में भारी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। जिसके चलते आसपास के इलाकों में यातायात का दबाव बढ़ सकता है। ट्रैफिक पुलिस ने बताया कि ट्रैफिक मूवमेंट को सुचारू करने के लिए विभिन्न मार्गों पर यातायात प्रतिबंध, डायवर्जन और पार्किंग नियम लागू किए गए हैं।

नो पार्किंग जोन

-अरिहंत मार्ग – मुकुंदपुर चौक से आजादपुर चौक तक।

-आउटर रिंग रोड – बुराड़ी चौक से मुकुंदपुर चौक तक।

-शांति स्वरूप त्यागी मार्ग से भाई परमानंद मार्ग – बुराड़ी चौक से परमानंद कॉलोनी तक।

- ट्रैफिक पुलिस के अनुसार उपरोक्त मार्गों पर खड़े किए गए वाहनों को टो कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। वहीं टो किए गए वाहनों को तारा सिंह चौक और शाह आलम बांध रोड (मजलिस पार्क मेट्रो स्टेशन के पीछे) पार्क किया जाएगा।

सड़कें बंद की जा सकती हैं (जरूरत पड़ने पर)

-शाह आलम बांध रोड (बुराड़ी डीडीए ग्राउंड के सामने)

-भाई परमानंद मार्ग (सिंगल कैरेजवे, बुराड़ी डीडीए ग्राउंड के सामने)

डायवर्जन बिंदु (जरूरत पड़ने पर)

-भाई परमानंद मार्ग पर स्थित रेड लाइट, योगराज कॉलोनी के पास

-शाह आलम बांध रोड, बुराड़ी डीडीए ग्राउंड के सामने

ट्रैफिक पुलिस ने यात्रियों से अपील की है कि वे संबंधित क्षेत्रों में अनावश्यक यात्रा से बचें और वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें। साथ ही, अधिकारियों के निर्देशों का पालन कर सहयोग करें।

बचने के लिए मार्ग

-शांति स्वरूप त्यागी मार्ग व भाई परमानंद मार्गः बुराड़ी चौक से किंग्सवे कैंप चौक तक।

-आउटर रिंग रोडः बुराड़ी चौक से मुकुंदपुर चौक तक।

-अरिहंत मार्गः मुकुंदपुर चौक से आजादपुर चौक तक (दोनों ओर की सड़कों पर)

-शाह आलम बांध रोड

श्रद्धालुओं के लिए सलाह

आयोजन स्थल तक आसानी से पहुंचने के लिए मजलिस पार्क मेट्रो स्टेशन का उपयोग करें।

-मजलिस पार्क मेट्रो स्टेशन का उपयोग कर आयोजन स्थल तक पहुंचे।

-भीड़ से बचने के लिए सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता दें।

-बसें रोड नंबर 51 पर उतर सकती हैं और शाह आलम बांध रोड के पास पार्क कर सकती हैं।

-निजी वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था तारा सिंह चौक और आसपास के मार्गों पर की गई है।

दिल्ली में 20 मई की शाम को लग सकता है भीषण जाम

आईपीएल मुकाबले को लेकर एडवाइजरी जारी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने आईपीएल मैच के कारण ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है। शाम को स्टेडियम के आसपास जाम लगने की आशंका है। कुछ मार्गों पर यातायात प्रतिबंधित रहेगा। दर्शकों को राजघाट पावर हाउस रोड पर पार्किंग मिलेगी और शटल सेवा उपलब्ध रहेगी। ऐप आधारित टैक्सी उपयोगकर्ताओं के लिए रिंग रोड पर विशेष पिक-एंड-ड्रॉप पॉइंट बनाए गए हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली में मंगलवार को अरुण जेटली स्टेडियम में होने वाले आईपीएल मैच से पहले ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। शाम पांच बजे के बाद मैच के चलते सड़कों पर लंबा जाम देखने को मिल सकता है। दर्शकों की भारी भीड़ के चलते यातयात पुलिस ने एक दिन पहले ही लोगों को अलर्ट कर दिया है। चेन्नई सुपरकिंग्स और राजस्थान रॉयल्स के बीच मंगलवार शाम सात बजे से मैच खेला जाएगा। ट्रैफिक पुलिस की ओर से जारी एडवाइजरी के अनुसार, इस दौरान बहादुरशाह जफर मार्ग, जवाहरलाल नेहरू मार्ग और आसफ अली रोड पर वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित रहेगी। परामर्श में कहा गया है कि दरियागंज से बहादुरशाह जफर मार्ग और गुरु नानक चौक से आसफ अली रोड तक भारी वाहनों या बसों को अनुमति नहीं दी जाएगी।

इसमें आगे कहा गया है कि यात्रियों को जेएलएन मार्ग पर राजघाट से कमला मार्केट, असफ अली रोड पर तुर्कमान गेट से दिल्ली गेट और बीएसजेड मार्ग पर दिल्ली गेट से रामचरण अग्रवाल चौक तक के रास्तों से बचने की सलाह दी गई है।

जेएलएन मार्ग पर बने खास गेटों से ही एंट्री मिलेगी

स्टेडियम में बहादुरशाह जफर मार्ग और जेएलएन मार्ग पर बने खास गेटों से ही एंट्री मिलेगी, और पार्किंग सिर्फ उन्हीं गाड़ियों के लिए होगी जिनके पास सही लेबल लगा होगा। परामर्श में कहा गया है, राजघाट पावर हाउस रोड, माता सुंदरी रोड और वेलोड्रोम रोड पर मुफ्त पार्किंग और पार्क-एंड-राइड की सुविधा उपलब्ध रहेगी, और मैच शुरू होने से दो घंटे पहले से लेकर मैच खत्म होने के एक घंटे बाद तक स्टेडियम के लिए शटल बसें चलेंगी।

इसमें आगे कहा गया है कि ऐप आधारित टैक्सी का इस्तेमाल करने वाले दर्शकों से अनुरोध किया गया है कि वे आईपी फ्लाईओवर और राजघाट क्रासिंग के बीच रिंग रोड पर सर्विस लेन का उपयोग करें और मौलाना आजाद मेडिकल कालेज और राजघाट चौक पर पिक-एंड-ड्राप पाइंट का इस्तेमाल करें।

दिल्लीवासियों के लिए अच्छी खबर, अब उबर ऐप से कर सकेंगे दिल्ली मेट्रो में सफर

कैब कंपनी उबर ने दिल्ली मेट्रो में टिकट बुकिंग की सुविधा शुरू की है। अब दिल्लीवासी उबर ऐप से क्यूआर-आधारित टिकट खरीद सकते हैं। यह सुविधा ओएनडीसी द्वारा संचालित है। उबर के अनुसार यह भारत में किसी सार्वजनिक बुनियादी वाली संस्था के साथ पहला समझौता है। इस साल यह सेवा तीन और शहरों में शुरू होगी। उबर ने भारत की डिजिटल सार्वजनिक सुविधाओं को बढ़ाने का निर्णय लिया है।

नई दिल्ली। कैब फैसिलिटी देनेवाली कंपनी उबर ने सोमवार से दिल्ली मेट्रो में टिकट बुकिंग करने की सुविधा लॉन्च की है। ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी) द्वारा संचालित उबर ऐप पर मेट्रो टिकटिंग की शुरुआत की गई है। कंपनी पहली बार दिल्ली में इसे लॉन्च कर रही है। अब दिल्लीवासी उबर ऐप के माध्यम से मेट्रो क्यूआर-आधारित टिकट खरीद सकते हैं। टिकट बुक करने के लिए आपको टिकट बुकिंग सेक्शन में जाना होगा। वहां पर डिटेल फिल करने के बाद आपको पेमेंट का ऑप्शन सेलेक्ट करना होगा। पेमेंट करने के बाद आपका क्यूआर कोड टिकट जेनरेट हो जाएगा। उबर के अनुसार, यह भारत की किसी सार्वजनिक बुनियादी वाली संस्था के साथ पहला समझौता है और सार्वजनिक परिवहन को और अधिक कनेक्टेड बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। उबर ने कहा कि इस साल भारत के तीन और शहरों में यह सेवा शुरू होने वाली है। यह समझौता २०२४ में उबर के सीईओ दारा खोसरोशाही की भारत यात्रा के दौरान एमओयू पर हस्ताक्षर करने के बाद हुआ है। इसमें उबर ने भारत की डिजिटल सार्वजनिक सुविधाओं को बढ़ाने निर्णय लिया है। इस सुविधा की लॉन्चिंग के वक्त उबर के मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी (सीटीओ) प्रवीण नेपल्ली नागा ने कहा कि भारत ने ओएनडीसी जैसे अपने डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से प्रौद्योगिकी के निर्माण में एक प्रभावशाली छलांग लगाई है और हम उबर ऐप पर मेट्रो टिकटिंग लाने के लिए उनके साथ समझौता करने से काफी रोमांचित हैं। हम वन-स्टॉप शॉप बनने के अपने दृष्टिकोण के एक कदम और करीब पहुंच गए हैं।" ओएनडीसी के कार्यवाहक सीईओ और सीओओ विभोर जैन ने कहा, "ओएनडीसी नेटवर्क में उबर का शामिल होना भारत में विश्वसनीय डिजिटल बुनियादी ढांचे तक पहुंच का विस्तार करने की दिशा में एक कदम है। मेट्रो टिकटिंग और लॉजिस्टिक्स में उबर की।

फुटपाथ का साथ

विजय गर्ग

सड़क पर तेज रफ्तार दौड़ती कारों और अतिक्रमण की भेंट चढ़े फुटपाथों पर पैदल यात्रियों का चलना अब दुश्वार हो चला है। यही वजह है कि बुजुर्ग लोग सड़कों पर आने से डरते हैं और घरों तक सिमटकर रह जाते हैं। वे फुटपाथ न होने के कारण सड़कों पर चलते हैं और अनियंत्रित गति वाले वाहनों के शिकार हो जाते हैं। अदालत में दिए गए एक आंकड़े के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले करीब बीस फीसदी लोग पैदल यात्री होते हैं। इन हालात में दिव्यांग लोग कैसे सड़कों पर निकल सकते हैं, ये कल्पना से परे है। देश के करोड़ों मूक पैदल यात्रियों को आवाज देने के मकसद से सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति ए.एस. ओका और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की खंडपीठ ने सख्त लहजे में कहा कि फुटपाथ की सुविधा लोगों का संवैधानिक अधिकार है। पीठ ने केंद्र व राज्यों को कहा कि दो महीने में सुनिश्चत करें शहरों व गांवों में पैदल चलने वालों के लिये साफ, अतिक्रमण मुक्त और दिव्यांगों के अनुकूल फुटपाथ उपलब्ध हों। सभी सार्वजनिक सड़कों पर उपयुक्त फुटपाथ बनाना और उनसे अतिक्रमण हटाना अनिवार्य है। कोर्ट ने केंद्र व राज्य सरकारों से कहा कि वे बताएं पैदल यात्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए उसके पास क्या नीति है। कोर्ट ने दो महीने में रिपोर्ट देने को कहा है। शीर्ष अदालत ने मुंबई हाईकोर्ट की ओर से पहले से जारी दिशा-निर्देशों को आदर्श मानते हुए अन्य राज्यों से इसे अपनाने को कहा।

दरअसल, कोर्ट भी इस बात से सहमत दिखा कि जब फुटपाथ नहीं होते तो गरीब, बुजुर्ग,बच्चे और दिव्यांगजन मजबूरी में सड़कों पर चलते हैं। वे भीड़भाड़ में हादसों का शिकार हो जाते हैं। अदालत ने कहा कि यह केवल यातायात का मुद्दा नहीं है, यह जीवन का अधिकार है। ये उन करोड़ों भारतीयों के लिए एक उम्मीद है जो जान जोखिम में डालकर सड़कों पर चलते हैं। अब हर कदम पर सुरक्षित और जीवन की अहमियत होनी चाहिए। निस्संदेह, देश में फुटपाथों की दुर्दशा, अतिक्रमण और दिव्यांगों की लाचारी किसी से छिपी नहीं है। अकेले वर्ष 2022 में 77 हजार पैदल यात्रियों के साथ हुई दुर्घटना में करीब 32,797 की मृत्यु हुई और 34 हजार गंभीर रूप से घायल हुए। निस्संदेह, कोर्ट ने पैदल चलने वाली करोड़ों की मूक बिरादरी को संवैधानिक आवाज देने देने की सार्थक पहल की है। विडंबना यह है कि देश की राजधानी दिल्ली में अस्सी फीसदी पैदल मार्गों पर रेहड़ी-पटरी वालों, दुकानदारों व गाड़ी वालों ने कब्जा कर रखा है। इस वर्ष हर माह करीब 48 पदयात्री सड़क दुर्घटना में मारे गए। यही वजह है कोर्ट ने फुटपाथ को संवैधानिक अधिकार बताते हुए इसे संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत गारंटीशुदा बताया। जिसे केंद्र व राज्य सरकारों को पैदल यात्रियों के लिये इसे सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। कोर्ट ने केंद्र सरकार को राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड के गठन के लिए सिर्फ छह माह का समय दिया है।

भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों संक्षिप्त परिचय

ऐसा कहा जाता है कि जब जब पृथ्वी पर कोई संकट आता है तो, भगवान अवतार लेकर उस संकट को दूर करते है।

भगवान शिव और भगवान विष्णु ने अनेको बार पृथ्वी पर अवतार लिया है।

आज हम आपको भगवान विष्णु के २४ अवतारों के बारे में बताएँगे। इन में से २३ अवतार अब तक पृथ्वी पर अवतरित हो चुके है, जब कि २४ वा अवतार 'कल्कि अवतार' के रूप में होना बाकी है।

इन २४ अवतार में से १० अवतार विष्णु जी के मुख्य अवतार माने जाते है। यह है,

१. मत्स्य अवतार,
२. कूर्म अवतार,
३. वराह अवतार,
४. नृसिंह अवतार,
५. वामन अवतार,
६. परशुराम अवतार,
७. राम अवतार,
८ कृष्ण अवतार,
९. बुद्ध अवतार और
१०. कल्कि अवतार।

१ - श्री सनकादि मुनि :

धर्म ग्रंथों के अनुसार सृष्टि के आरंभ में लोक पितामह ब्रह्मा ने अनेक लोकों की रचना करने की इच्छा से घोर तपस्या की। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने तप अर्थ वाले सन नाम से युक्त होकर सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चार मुनियों के रूप में अवतार लिया।

ये चारों प्राकट्य काल से ही मोक्ष मार्ग परायण, ध्यान में तल्लीन रहने वाले, नित्यसिद्ध एवं नित्य विरक्त थे। ये भगवान विष्णु के सर्वप्रथम अवतार माने जाते हैं।

२ - वराह अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु ने दूसरा अवतार वराह रूप में लिया था। वराह अवतार से जुड़ी कथा इस प्रकार है-

पुरातन समय में दैत्य हिरण्याक्ष ने जब पृथ्वी को ले जाकर समुद्र में छिपा दिया तब, ब्रह्मा की नाक से भगवान विष्णु वराह रूप में प्रकट हुए। भगवान विष्णु के इस रूप को देखकर सभी देवताओं व ऋषि-मुनियों ने उनकी स्तुति की।

सबके आग्रह पर भगवान वराह ने पृथ्वी को ढूंढना प्रारंभ किया। अपनी थूथनी की सहायता से उन्होंने पृथ्वी का पता लगा लिया और समुद्र के अंदर जाकर अपने दांतों पर रखकर वे पृथ्वी को बाहर ले आए।

जब हिरण्याक्ष दैत्य ने यह देखा तो उसने भगवान विष्णु के वराह रूप को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में भीषण युद्ध हुआ। अंत में भगवान वराह ने हिरण्याक्ष का वध कर दिया।

इसके बाद भगवान वराह ने अपने खुरों से जल को स्तंभित कर उस पर पृथ्वी को स्थापित कर दिया।

*** - नारद अवतार :**

धर्म ग्रंथों के अनुसार देवर्षि नारद भी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। शास्त्रों के अनुसार नारद मुनि, ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक हैं। उन्होंने कठिन तपस्या से देवर्षि पद प्राप्त किया है। वे भगवान विष्णु के अनन्य भक्तों में से एक माने जाते हैं।

देवर्षि नारद धर्म के प्रचार तथा लोक-कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। शास्त्रों में देवर्षि नारद को भगवान का मन भी कहा गया है। श्रीमद्भागवतगीता के दशम अध्याय के २६वें श्लोक में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है-

'देवर्षीणाम्चनारदः।'

अर्थात्देवर्षियों में मैं नारद हूं।

४ - नर-नारायण :

सृष्टि के आरंभ में भगवान विष्णु ने धर्म की स्थापना के लिए दो रूपों में अवतार लिया। इस अवतार में वे अपने मस्तक पर जटा धारण किए हुए थे। उनके हाथों में हंस, चरणों में चक्र एवं वक्षःस्थल में श्रीवत्स के चिन्ह थे। उनका संपूर्ण वेष तपस्वियों के समान था। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु ने नर-नारायण के रूप में यह अवतार लिया था।

५ - कपिल मुनि :

भगवान विष्णु ने पांचवा अवतार कपिल मुनि के रूप में लिया। इनके पिता का नाम महर्षि कर्दम व माता का नाम देवहूति था। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह के शरीर त्याग के समय वेदज्ञ व्यास आदि ऋषियों के साथ भगवा कपिल भी वहां उपस्थित थे। भगवान कपिल के क्रोध से ही राजा सगर के साठ हजार पुत्र भस्म हो गए थे। भगवान कपिल सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं। कपिल मुनि भागवत धर्म के प्रमुख बारह आचार्यों में से एक हैं।

६ - दत्तात्रेय अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार दत्तात्रेय भी भगवान विष्णु के अवतार हैं। इनकी उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है-

एक बार माता लक्ष्मी, पार्वती व सरस्वती को अपने पातिव्रत्य पर अत्यंत गर्व हो गया। भगवान ने इनका अंहकार नष्ट करने के लिए लीला रची।

उसके अनुसार एक दिन नारदजी घूमते-घूमते देवलोक पहुंचे और तीनों देवियों को बारी-बारी जाकर कहा कि, ऋषि अत्रि की पत्नी अनुसूइया के सामने आपका सतीत्व कुछ भी नहीं।

तीनों देवियों ने यह बात अपने स्वामियों को बताई और उनसे कहा कि, वे अनुसूइया के पातिव्रत्य की परीक्षा लें।

तब भगवान शंकर, विष्णु व ब्रह्मा साधु वेश बनाकर अत्रि मुनि के आश्रम आए। महर्षि अत्रि उस समय आश्रम में नहीं थे।

तीनों ने देवी अनुसूइया से भिक्षा मांगी मगर यह भी कहा कि, आपको निर्वस्त्र होकर हमें भिक्षा देनी होगी।

अनुसूइया पहले तो यह सुनकर चौंक गई, लेकिन फिर साधुओं का अपमान न हो इस डर से उन्होंने अपने पति का स्मरण किया और बोला कि यदि मेरा पातिव्रत्य धर्म सत्य है तो ये तीनों साधु छः-छः मास के शिशु हो जाएं।

ऐसा बोलते ही त्रिदेव शिशु होकर रोने लगे। तब अनुसूइया ने माता बनकर उन्हें गोद में लेकर स्तनपान कराया और पालने में झूलाने लगीं।

जब तीनों देव अपने स्थान पर नहीं लौटे तो देवियां व्याकुल हो गईं। तब नारद ने वहां आकर सारी बात बताई।

तीनों देवियां अनुसूइया के पास आईं और क्षमा मांगी। तब देवी अनुसूइया ने त्रिदेव को अपने पूर्व रूप में कर दिया।

प्रसन्न होकर त्रिदेव ने उन्हें वरदान दिया कि हम तीनों अपने अंश से तुम्हारे गर्भ से पुत्र रूप में जन्म लेंगे।

तब ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, शंकर के अंश से दुर्वासा और विष्णु के अंश से दत्तात्रेय का जन्म हुआ।

७ - यज्ञ :

भगवान विष्णु के सातवे अवतार का नाम यज्ञ है। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान यज्ञ का जन्म स्वायम्भुव मन्वन्तर में हुआ था।

स्वायम्भुव मनु की पत्नी शतरूपा के गर्भ से आकूति का जन्म हुआ। वे रूचि प्रजापति की पत्नी हुई। इन्हीं आकूति के यहां भगवान विष्णु यज्ञ नाम से अवतरित हुए।

भगवान यज्ञ के उनकी धर्मपत्नी दक्षिणा से अत्यंत तेजस्वी बारह पुत्र उत्पन्न हुए। वे ही स्वायम्भुव मन्वन्तर में याम नामक बारह देवता कहलाए।

८ - भगवान ऋषभदेव :

भगवान विष्णु ने ऋषभदेव के रूप में आठवा अवतार लिया। धर्म ग्रंथों के अनुसार महाराज नाभि की कोई संतान नहीं थी। इस कारण उन्होंने अपनी धर्मपत्नी मेरुदेवी के साथ पुत्र की कामना से यज्ञ किया।

यज्ञ से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु स्वयं प्रकट हुए और उन्होंने महाराज नाभि को वरदान दिया कि मैं ही तुम्हारे यहां पुत्र रूप में जन्म लूंगा।

वरदान स्वरूप कुछ समय बाद भगवान विष्णु महाराज नाभि के यहां पुत्र रूप में जन्मे। पुत्र के अत्यंत सुंदर सुगठित शरीर, कीर्ति, तेल, बल, ऐश्वर्य, यश, पराक्रम और शूरवीरता आदि गुणों को देखकर महाराज नाभि ने उसका नाम ऋषभ (श्रेष्ठ) रखा।

९ - आदिराज पृथु :

भगवान विष्णु के एक अवतार का नाम आदिराज पृथु है। धर्म ग्रंथों के अनुसार स्वायम्भुव मनु के वंश में अंग नामक प्रजापति का विवाह मृत्यु की मानसिक पुत्री सुनीथा के साथ हुआ। उनके यहां वेन नामक पुत्र हुआ। उसने भगवान को मानने से इंकार कर दिया और स्वयं की पूजा करने के लिए कहा।

तब महर्षियों ने मंत्र पूत कुशों से उसका वध कर दिया। तब महर्षियों ने पुत्रहीन राजा वेन की

भुजाओं का मंथन किया, जिससे पृथु नाम पुत्र उत्पन्न हुआ।

पृथु के दाहिने हाथ में चक्र और चरणों में कमल का चिह्न देखकर ऋषियों ने बताया कि पृथु के वेष में स्वयं श्रीहरि का अंश अवतरित हुआ है।

१० - मत्स्य अवतार :

पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु ने सृष्टि को प्रलय से बचाने के लिए मत्स्यावतार लिया था। इसकी कथा इस प्रकार है-

कृतयुग के आदि में राजा सत्यव्रत हुए। राजा सत्यव्रत एक दिन नदी में स्नान कर जलांजलि दे रहे थे। अचानक उनकी अंजलि में एक छोटी सी मछली आई।

उन्होंने देखा तो सोचा वापस सागर में डाल दूं,

लेकिन उस मछली ने बोला- आप मुझे सागर में मत डालिए अन्यथा बड़ी मछलियां मुझे खा जाएंगी। तब राजा सत्यव्रत ने मछली को अपने कमंडल में रख लिया। मछली और बड़ी हो गई तो राजा ने उसे अपने सरोवर में रखा, तब देखते ही देखते मछली और बड़ी हो गई।

राजा को समझ आ गया कि यह कोई साधारण जीव नहीं है। राजा ने मछली से वास्तविक स्वरूप में आने की प्रार्थना की।

राजा की प्रार्थना सुन साक्षात चारभुजाधारी भगवान विष्णु प्रकट हो गए और उन्होंने कहा कि ये मेरा मत्स्यावतार है।

भगवान ने सत्यव्रत से कहा-

सुनो राजा सत्यव्रत ! आज से सात दिन बाद प्रलय होगी। तब मेरी प्रेरणा से एक विशाल नाव तुम्हारे पास आएगी। तुम सप्त ऋषियों, औषधियों, बीजों व प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को लेकर उसमें बैठ जाना, जब तुम्हारी नाव डगमगाने लगेगी, तब मैं मत्स्य के रूप में तुम्हारे पास आऊंगा।

उस समय तुम वासुकि नाग के द्वारा उस नाव को मेरे सींग से बांध देना। उस समय प्रश्न पूछने पर मैं तुम्हें उत्तर दूंगा, जिससे मेरी महिमा जो परब्रह्म नाम से विख्यात है, तुम्हारे हृदय में प्रकट हो जाएगी।

तब समय आने पर मत्स्यरूपधारी भगवान विष्णु ने राजा सत्यव्रत को तत्वज्ञान का उपदेश दिया, जो मत्स्यपुराण नाम से प्रसिद्ध है।

११ - कूर्म अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु ने कूर्म (कछुए) का अवतार लेकर समुद्र मंथन में सहायता की थी। भगवान विष्णु के कूर्म अवतार को कच्छप अवतार भी कहते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है-

एक बार महर्षि दुर्वासा ने देवताओं के राजा इंद्र को श्राप देकर श्रीहीन कर दिया। इंद्र जब भगवान विष्णु के पास गए तो उन्होंने समुद्र मंथन करने के लिए कहा। तब इंद्र भगवान विष्णु के कहे अनुसार दैत्यों व देवताओं के साथ मिलकर समुद्र मंथन करने के लिए तैयार हो गए।

समुद्र मंथन करने के लिए मंदराचल पर्वत को मथानी एवं नागराज वासुकि को नेती बनाया गया। देवताओं और दैत्यों ने अपना मतभेद भुलाकर मंदराचल को उखाड़ा और उसे समुद्र की ओर ले चले, लेकिन वे उसे अधिक दूर तक नहीं ले जा सके।

तब भगवान विष्णु ने मंदराचल को समुद्र तट पर रख दिया। देवता और दैत्यों ने मंदराचल को समुद्र में डालकर नागराज वासुकि को नेती बनाया।

किंतु मंदराचल के नीचे कोई आधार नहीं होने के कारण वह समुद्र में डूबने लगा।

यह देखकर भगवान विष्णु विशाल कूर्म (कछुए) का रूप धारण कर समुद्र में मंदराचल के आधार बन गए। भगवान कूर्म की विशाल पीठ पर मंदराचल तेजी से घुमने लगा और इस प्रकार समुद्र मंथन संपन्न हुआ।

१२ - भगवान धन्वन्तरि :

धर्म ग्रंथों के अनुसार जब देवताओं व दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो उसमें से सबसे पहले भयंकर विष निकला जिसे भगवान शिव ने पी लिया।

इसके बाद समुद्र मंथन से उच्चैश्रवा घोड़ा, देवी लक्ष्मी, ऐरावत हाथी, कल्प वृक्ष, अप्सराएं और भी बहुत से रत्न निकले।

सबसे अंत में भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। यही धन्वन्तरि भगवान विष्णु के अवतार माने गए हैं। इन्हें औषधियों का स्वामी भी माना गया है।

१* - मोहिनी अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान सबसे अंत में धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर निकले। जैसे ही अमृत मिला अनुशासन भंग हुआ।

देवताओं ने कहा हम ले लें, दैत्यों ने कहा हम ले लें।

इसी खींचातानी में इंद्र का पुत्र जयंत अमृत कुंभ लेकर भाग गया। सारे दैत्य व देवता भी उसके पीछे भागे। असुरों व देवताओं में भयंकर मार-काट मच गई।

देवता परेशान होकर भगवान विष्णु के पास गए। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी अवतार लिया।

भगवान ने मोहिनी रूप में सबको मोहित कर दिया किया। मोहिनी ने देवता व असुर की बात सुनी और कहा कि, यह अमृत कलश मुझे दे दीजिए तो मैं बारी-बारी से देवता व असुर को अमृत का पान करा दूंगी।

दोनों मान गए। देवता एक तरफ तथा असुर दूसरी तरफ बैठ गए।

फिर मोहिनी रूप धरे भगवान विष्णु ने मधुर गान गाते हुए तथा नृत्य करते हुए देवता व असुरों को अमृत पान कराना प्रारंभ किया ।

वास्तविकता में मोहिनी अमृत पान तो सिर्फ देवताओं को ही करा रही थी, जबकि असुर समझ रहे थे कि वे भी अमृत पी रहे हैं।

इस प्रकार भगवान विष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर देवताओं का भला किया।

१४ - भगवान नृसिंह :

भगवान विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर दैत्यों के राजा हिरण्यकशिपु का वध किया था। इस अवतार की कथा इस प्रकार है-

धर्म ग्रंथों के अनुसार दैत्यों का राजा हिरण्यकशिपु स्वयं को भगवान से भी अधिक बलवान मानता था। उसे मनुष्य, देवता, पक्षी, पशु, न दिन में, न रात में, न धरती पर, न आकाश में, न अस्त्र से, न शस्त्र से मरने का वरदान प्राप्त था। उसके राज में जो भी भगवान विष्णु की पूजा करता था उसको दंड दिया जाता था।

उसके पुत्र का नाम प्रह्लाद था। प्रह्लाद बचपन से ही भगवान विष्णु का परम भक्त था। यह बात जब हिरण्यकशिपु का पता चली तो वह बहुत क्रोधित हुआ और प्रह्लाद को समझाने का प्रयास किया, लेकिन फिर भी जब प्रह्लाद नहीं माना तो हिरण्यकशिपु ने उसे मृत्युदंड दे दिया।

हर बार भगवान विष्णु के चमत्कार से वह बच गया। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका, जिसे अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, वह प्रह्लाद को लेकर धधकती हुई अग्नि में बैठ गई।

तब भी भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद बच गया और होलिका जल गई। जब हिरण्यकशिपु स्वयं प्रह्लाद को मारने ही वाला था तब भगवान विष्णु नृसिंह का अवतार लेकर खंबे से प्रकट हुए और उन्होंने अपने नाखूनों से हिरण्यकशिपु का वध कर दिया।

१५ - वामन अवतार :

सत्ययुग में प्रह्लाद के पौत्र दैत्यराज बलि ने स्वर्गलोक पर अधिकार कर लिया। सभी देवता इस विपत्ति से बचने के लिए भगवान विष्णु के पास गए।

तब भगवान विष्णु ने कहा कि, मैं स्वयं देवमाता अदिति के गर्भ से उत्पन्न होकर तुम्हें स्वर्ग का राज्य दिलाऊंगा। कुछ समय पश्चात भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया।

एक बार जब बलि महान यज्ञ कर रहा था तब भगवान वामन बलि की यज्ञशाला में गए और राजा बलि से तीन पग धरती दान में मांगी।

राजा बलि के गुरु शुक्राचार्य भगवान की लीला समझ गए और उन्होंने बलि को दान देने से मना कर दिया। लेकिन बलि ने फिर भी भगवान वामन को तीन पग धरती दान देने का संकल्प ले लिया।

भगवान वामन ने विशाल रूप धारण कर एक पग में धरती और दूसरे पग में स्वर्ग लोक नाप लिया। जब तीसरा पग रखने के लिए कोई स्थान नहीं बचा तो बलि ने भगवान वामन को अपने सिर पर पग रखने को कहा।

बलि के सिर पर पग रखने से वह सुतललोक पहुंच गया। बलि की दानवीरता देखकर भगवान ने उसे सुतललोक का स्वामी भी बना दिया।

इस तरह भगवान वामन ने देवताओं की सहायता कर उन्हें स्वर्ग पुनः लौटाया।

१६ - हयग्रीव अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार एक बार मधु और कैटभ नाम के दो शक्तिशाली राक्षस ब्रह्माजी से वेदों का हरण कर रसातल में पहुंच गए। वेदों का हरण हो जाने से ब्रह्माजी बहुत दुःखी हुए और भगवान विष्णु के पास पहुंचे।

तब भगवान ने हयग्रीव अवतार लिया। इस अवतार में भगवान विष्णु की गर्दन और मुख घोड़े के समान थी।

तब भगवान हयग्रीव रसातल में पहुंचे और मधु-कैटभ का वध कर वेद पुनः भगवान ब्रह्मा को दे दिए।

१७ - श्रीहरि अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार प्राचीन समय में त्रिकूट नामक पर्वत की तराई में एक शक्तिशाली गजेंद्र अपनी हथिनियों के साथ रहता था। एक बार वह अपनी हथिनियों के साथ तालाब में स्नान करने गया।

वहां एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया और पानी के अंदर खींचने लगा। गजेंद्र और मगरमच्छ का संघर्ष एक हजार साल तक चलता रहा।

अंत में गजेंद्र शिथिल पड़ गया और उसने भगवान श्रीहरि का ध्यान किया। गजेंद्र की स्तुति सुनकर भगवान श्रीहरि प्रकट हुए और उन्होंने अपने चक्र से मगरमच्छ का वध कर दिया।

भगवान श्रीहरि ने गजेंद्र का उद्धार कर उसे अपना पार्षद बना लिया।

१८ - परशुराम अवतार :

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार परशुराम भगवान विष्णु के प्रमुख अवतारों में से एक थे। भगवान परशुराम के जन्म के संबंध में दो कथाएं प्रचलित हैं।

हरिवंशपुराण के अनुसार उन्हीं में से एक कथा इस प्रकार है-

प्राचीन समय में महिष्मती नगरी पर शक्तिशाली हैययवंशी क्षत्रिय कार्तवीर्य अर्जुन(सहस्त्रबाहु) का शासन था। वह बहुत अभिमानी था और अत्याचारी भी।

एक बार अग्निदेव ने उससे भोजन कराने का आग्रह किया। तब सहस्त्रबाहु ने घमंड में आकर कहा कि, आप जहां से चाहें, भोजन प्राप्त कर सकते हैं, सभी ओर मेरा ही राज है। तब अग्निदेव ने वनों को जलाना शुरु किया।

एक वन में ऋषि आपव तपस्या कर रहे थे। अग्नि ने उनके आश्रम को भी जला डाला। इससे क्रोधित होकर ऋषि ने सहस्त्रबाहु को श्राप दिया कि, भगवान विष्णु, परशुराम के रूप में जन्म लेंगे और न सिर्फ सहस्त्रबाहु का नहीं बल्कि समस्त क्षत्रियों का सर्वनाश करेंगे।

इस प्रकार भगवान विष्णु ने भार्गव कुल में महर्षि जमदग्नि के पांचवें पुत्र के रूप में जन्म लिया।

१९ - महर्षि वेदव्यास :

पुराणों में महर्षि वेदव्यास को भी भगवान विष्णु का ही अंश माना गया है। भगवान व्यास नारायण के कलावतार थे। वे महाज्ञानी महर्षि पराशर के पुत्र रूप में प्रकट हुए थे।

उनका जन्म कैवर्तराज की पोष्यपुत्री सत्यवती के गर्भ से यमुना के द्वीप पर हुआ था। उनके शरीर का रंग काला था। इसलिए उनका एक नाम कृष्णद्वैपायन भी था।

इन्होंने ही मनुष्यों की आयु और शक्ति को देखते हुए वेदों के विभाग किए।

इसलिए इन्हें वेदव्यास भी कहा जाता है। इन्होंने ही महाभारत ग्रंथ की रचना भी की।

२० - हंस अवतार :

एक बार भगवान ब्रह्मा अपनी सभा में बैठे थे। तभी वहां उनके मानस पुत्र सनकादि पहुंचे और भगवान ब्रह्मा से मनुष्यों के मोक्ष के संबंध में चर्चा करने लगे।

तभी वहां भगवान विष्णु महाहंस के रूप में प्रकट हुए और उन्होंने सनकादि मुनियों के संदेह का निवारण किया।

इसके बाद सभी ने भगवान हंस की पूजा की। इसके बाद महाहंसरूपधारी श्रीभगवान अदृश्य होकर अपने पवित्र धाम चले गए।

२१ - श्रीराम अवतार :

त्रेतायुग में राक्षसराज रावण का बहुत आतंक था। उससे देवता भी डरते थे। उसके वध के लिए भगवान विष्णु ने राजा दशरथ के यहां माता कौशल्या के गर्भ से पुत्र रूप में जन्म लिया।

इस अवतार में भगवान विष्णु ने अनेक राक्षसों का वध किया और मर्यादा का पालन करते हुए अपना जीवन यापन किया।

पिता के कहने पर वनवास गए। वनवास भोगते समय राक्षसराज रावण उनकी पत्नी सीता का हरण कर ले गया। सीता की खोज में भगवान लंका पहुंचे, वहां भगवान श्रीराम और रावण का घोर युद्ध जिसमें रावण मारा गया।

इस प्रकार भगवान विष्णु ने राम अवतार लेकर देवताओं को भय मुक्त किया।

२२ - श्रीकृष्ण अवतार :

द्वापरयुग में भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार लेकर अधर्मियों का नाश किया। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ था। इनके पिता का नाम वसुदेव और माता का नाम देवकी था। भगवान श्रीकृष्ण ने इस अवतार में अनेक चमत्कार किए और दुष्टों का सर्वनाश किया।

कंस का वध भी भगवान श्रीकृष्ण ने ही किया। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथि बने और दुनिया को गीता का ज्ञान दिया।

धर्मराज युधिष्ठिर को राजा बना कर धर्म की स्थापना की। भगवान विष्णु का ये अवतार सभी अवतारों में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

२* - बुद्ध अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार बौद्धधर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध भी भगवान विष्णु के ही अवतार थे परंतु पुराणों में वर्णित भगवान बुद्धदेव का जन्म गया के समीप कीकट में हुआ बताया गया है और उनके पिता का नाम अजन बताया गया है। यह प्रसंग पुराण वर्णित बुद्धावतार का ही है।

एक समय दैत्यों की शक्ति बहुत बढ़ गई। देवता भी उनके भय से भागने लगे। राज्य की कामना से दैत्यों ने देवराज इंद्र से पूछा कि हमारा साम्राज्य स्थिर रहे, इसका उपाय क्या है।

तब इंद्र ने शुद्ध भाव से बताया कि सुस्थिर शासन के लिए यज्ञ एवं वेदविहित आचरण आवश्यक है। तब दैत्य वैदिक आचरण एवं महायज्ञ करने लगे, जिससे उनकी शक्ति और बढने लगी। तब सभी देवता भगवान विष्णु के पास गए।

तब भगवान विष्णु ने देवताओं के हित के लिए बुद्ध का रूप धारण किया। उनके हाथ में मार्जनी थी और वे मार्ग को बुहारते हुए चलते थे।

इस प्रकार भगवान बुद्ध दैत्यों के पास पहुंचे और उन्हें उपदेश दिया कि यज्ञ करना पाप है। यज्ञ से जीव हिंसा होती है।

यज्ञ की अग्नि से कितने ही प्राणी भस्म हो जाते हैं। भगवान बुद्ध के उपदेश से दैत्य प्रभावित हुए। उन्होंने यज्ञ व वैदिक आचरण करना छोड़ दिया।

इसके कारण उनकी शक्ति कम हो गई और देवताओं ने उन पर हमला कर अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया।

२४ - कल्कि अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार कलयुग में भगवान विष्णु कल्कि रूप में अवतार लेंगे। कल्कि अवतार कलियुग व सतयुग के संधिकाल में होगा।

यह अवतार ६४ कलाओं से युक्त होगा।

पुराणों के अनुसार उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले के शंभल नामक स्थान पर विष्णुयशा नामक तपस्वी ब्राह्मण के घर भगवान कल्कि पुत्र रूप में जन्म लेंगे।

कल्कि देवदत्त नामक घोड़े पर सवार होकर संसार से पापियों का विनाश करेंगे और धर्म की पुनःस्थापना करेंगे।

इन दो रूट्स से की जाती है कैलाश मानसरोवर यात्रा, 29 जून से हो रही शुरूआत

इस बार 30 जून से 25 अगस्त तक कैलाश मानसरोवर की यात्रा होगी। ऐसे में श्रद्धालु यात्रा का रजिस्ट्रेशन करवाने से पहले इस यात्रा का रूट जरूर चेक करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कैलाश मानसरोवर की यात्रा रूट के बारे में बताने जा रहे हैं।

हिंदू धर्म में सनातल काल से कैलाश मानसरोवर की यात्रा एक पवित्र यात्रा मानी जाती रही है। जब भी यह यात्रा शुरू होती है, तो इसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं। इस साल भी 30 जून से कैलाश मानसरोवर की यात्रा शुरू होने जा रही है। वहीं इससे पहले कोडिव 19 महामारी और भारत-चीन सीमा पर तनाव के कारण यह यात्रा बंद हो गई थी। लेकिन अब भारत सरकार द्वारा इस यात्रा को मंजूरी दे दी गई है। इस बार 30 जून से 25 अगस्त तक कैलाश मानसरोवर की यात्रा होगी। ऐसे में श्रद्धालु यात्रा का रजिस्ट्रेशन करवाने से पहले इस यात्रा का रूट जरूर चेक करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कैलाश मानसरोवर की यात्रा रूट के बारे में बताने जा रहे हैं।

कैलाश मानसरोवर यात्रा रूट

अगर आप भी कैलाश मानसरोवर की यात्रा में शामिल होने का प्लान बना रहे हैं। तो बता दें कि भारत सरकार द्वारा इस यात्रा के दो रूट्स तय किए गए हैं। ऐसे में इस यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्री इस पवित्र और प्रसिद्ध यात्रा को पूरा कर सकते हैं।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा उत्तराखंड के लिपुलेख दर्रे और दूसरा सिक्किम के नाथुला दर्रे से होती है। इन दो रूट्स से आप भी इस यात्रा को पूरा कर सकते हैं।

लिपुलेख दर्रा

अगर आप उत्तराखंड से कैलाश मनसरोवर की यात्रा करना चाहते हैं। तो इस यात्रा की शुरूआत दिल्ली से होगी। दिल्ली में मेडिकल जांच कराने के बाद आपको अल्मोड़ा होते हुए धारचूला, बूढ़ी, गुंजी और लिपुलेख दर्रा जैसे पड़ाव को पार करते हुए दारचेन जाना होगा। फिर यहां से आप कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील का दर्शन कर पाएंगे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, लिपुलेख दर्रे से कैलाश मनसरोवर की यात्रा में करीब 24 से 25 दिन लगते हैं। वहीं इस यात्रा को शुरू करने से पहले दिल्ली में स्वास्थ्य की जांच की जाती है। वहीं करीब इसमें 4-5 दिन लगते हैं। यात्रा के हर पड़ाव पर 1-2 दिन स्टे करना होता है। इस मार्ग से सिर्फ 1000 यात्रियों को जाने की अनुमति मिलती है।

नाथुला दर्रा

लिपुलेख दर्रे के साथ ही आप सिक्किम के नाथुला दर्रे से कैलाश मानसरोवर की यात्रा कर सकते हैं। इस रूट से यात्रा को पूरा करने में करीब 22 से 23 दिन का समय लगता है। इस रूट से यात्रा की शुरूआत दिल्ली से होती है।

आप दिल्ली में 4-5 दिनों तक मेडिकल चेकअप के बाद सिक्किम के गंगटोक जाना पड़ता है। गंगटोक से शेरथांग, लाजी और कंगमा होते हुए आपको दारचेन पहुंचना होगा। दारचेन में 1 रात स्टे करने के बाद अगले दिन कैलाश पर्वत और फिर मानसरोवर झील के दर्शन करें। फिर आपको वापस भी इसी रूट से दिल्ली आना होता है। हालांकि इस रूट से करीब 750 तीर्थ यात्रियों को जाने की परमिशन है।

जीवन और उसकी परिभाषा

जीवन क्या है? उसके स्वरूप को समझा जाना चाहिए और उसके साथ जुड़े हुए तथ्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए, भले ही वे कठोर और अप्रिय ही प्रतीत क्यों न होते हों। जीवन एक चुनौती है, एक संग्राम है, और एक जोखिम है। उसे इसी रूप में अंगीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। जीवन एक रहस्य है, तिलस्म है, भूल-भुलैया और गोरखधन्धा है।

गम्भीरता और सतर्कता के आधार पर ही उसकी तह तक पहुँचा जा सकता है और भ्रान्तियों के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों से बचा जा सकता है। जीवन कर्तव्य के रूप में अत्यन्त भारी किन्तु अभिनेता की तरह हँसने-हँसाने वाला- हलका फुलका रंगमंच भी है।

जीवन एक गीत है जिसे पंचम स्वर में गाया जा सकता है। जीवन एक स्वप्न है जिसमें अपने को खोया जा सके जो भरपूर आनन्द का रसास्वादन किया जा सकता है। जीवन अवसर है जिसे गँवा देने पर सब कुछ हाथ से गुम जाता है। जीवन एक प्रतिज्ञा है- यात्रा है और कला है।

इसको किस प्रकार सफल बनाया जा सकता है जिसने इसे जान लिया और मान लिया, समझना चाहिए कि वह सच्चा रत्न पारखी और उपलब्ध विभूतियों का सदुपयोग कर सकने वाला भाग्यशाली है। जीवन सौन्दर्य है, जीवन प्रेम है, जीवन वह सब कुछ है जो नियन्ता की इस सुविस्तृत सृष्टि में सर्वोत्तम कहा जा सके।

आतंक के विरुद्ध अडिग संकल्प: राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस

21 मई का दिन भारत के इतिहास में एक ऐसी तारीख है, जो दुख की स्याही से लिखी गई, मगर शांति, एकता और आतंकवाद के खिलाफ अडिग संकल्प की ज्योति जलाती है। 1991 में तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में हुए एक क्रूर आत्मघाती हमले ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जैसे दूरदर्शी नेता को हमसे छीन लिया। इस हृदयविदारक त्रासदी ने न केवल एक परिवार को तोड़ा, बल्कि आतंकवाद की विनाशकारी शक्ति को उजागर कर राष्ट्र की प्रगति और शांति को चुनौती दी। इस दुखद स्मृति को जीवित रखने और आतंकवाद के वीभत्स चेहरे से समाज को आगाह करने के लिए भारत सरकार ने इस दिन को राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया। यह दिन हमें अतीत के ज़ख्मों को सहलाने का मौका देता है, साथ ही एकजुट होकर वैचारिक और सामाजिक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है, ताकि हम एक सुरक्षित, समृद्ध और समावेशी भारत का स्वप्न साकार कर सकें।

आतंकवाद एक ऐसी वैश्विक बीमारी है, जो न तो सीमाओं को मानती है, न ही धर्म, जाति या संस्कृति को। यह केवल भय, हिंसा और अस्थिरता का जाल बुनता है, जो समाज की नींव को कमजोर करता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और लोकतांत्रिक देश के लिए आतंकवाद एक ऐसी चुनौती रहा है, जिसने बार-बार इसकी एकता और अखंडता को परखा है। पंजाब में खालिस्तानी उग्रवाद, जम्मू-कश्मीर में अलगाववादी गतिविधियाँ, उत्तर-पूर्वी राज्यों में विद्रोही आंदोलन और नक्सलवाद के रूप में आतंकवाद ने विभिन्न रूपों में देश को आघात पहुँचाया है। ये सभी गतिविधियाँ न केवल निर्दोष लोगों की जान लेती हैं, बल्कि सामाजिक समरसता, आर्थिक प्रगति और राष्ट्रीय एकता को भी चोट पहुँचाती हैं। आतंकवाद का यह विषैला प्रभाव समाज में अविश्वास और भय का माहौल पैदा करता है, जिससे देश का विकास अवरुद्ध होता है।

राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस हमें अतीत की त्रासदियों से सबक लेकर भविष्य को सुरक्षित बनाने की प्रेरणा देता है। यह दिन सिखाता है कि आतंकवाद के खिलाफ जंग केवल सुरक्षा बलों की नहीं, बल्कि हर नागरिक की साझा जिम्मेदारी है। स्कूलों, कॉलेजों, कार्यालयों और सामाजिक संगठनों में आयोजित शपथ समारोह, जागरूकता अभियान, सेमिनार और रैलियाँ हमें हिंसा का विरोध करने, सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का संकल्प दिलाती हैं। यह शपथ महज औपचारिकता नहीं, बल्कि एक गहरी नैतिक प्रतिबद्धता है, जो हमें विचारों, संवाद

और एकजुटता के साथ आतंकवाद का मुकाबला करने का आह्वान करती है।

राजीव गांधी की हत्या एक ऐसी घटना थी, जिसने भारत के आधुनिकीकरण और प्रगति के स्वप्न को गहरा आघात पहुँचाया। वे एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति के माध्यम से भारत को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान दिलाने का सपना देखा था। लेकिन एक आत्मघाती हमले ने न केवल उनके जीवन को समाप्त किया, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आशाओं को भी झटका दिया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि आतंकवाद केवल शारीरिक हिंसा नहीं, बल्कि एक ऐसी मानसिकता है, जो समाज को तोड़ने और प्रगति को रोकने का काम करती है। उनकी मृत्यु ने यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद का दंश कितना गहरा और अमानवीय हो सकता है।

डिजिटल युग में आतंकवाद ने नई चालें रची हैं, जहाँ सोशल मीडिया और इंटरनेट के ज़रिए कट्टरपंथी विचारधाराएँ और भ्रामक प्रचार पंख फैलाते हैं। आतंकवादी संगठन युवा मनों को भटकाने की साजिश रचते हैं, उन्हें हिंसा और नफरत की अंधेरी राह पर धकेलने की कोशिश करते हैं। राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस हमें जगा देता है कि हमारी युवा पीढ़ी को वैचारिक और नैतिक बल से लैस करना होगा। हमें उन्हें सहिष्णुता, संवाद और विविधता के सम्मान जैसे मूल्यों का पाठ पढ़ाना होगा। माता-पिता, शिक्षक और समुदाय के अगुवाओं का यह दायित्व है कि वे युवाओं को हिंसा और असहिष्णुता की ज़हरीली विचारधाराओं से बचाएँ। हम एक ऐसा समाज रचें, जहाँ संवाद की मशाल जलती हो और सह-अस्तित्व की सुगंध बिखरे, ताकि आतंकवाद की काली छाया को हमेशा के लिए मिटाया जा सके।

भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्रता, समानता और अभिव्यक्ति की आज़ादी का अमूल्य अधिकार देता है, पर ये अधिकार तभी जीवंत हैं, जब समाज में शांति और सुव्यवस्था का प्रकाश हो। आतंकवाद इन अधिकारों को कुचलकर भय का साम्राज्य स्थापित करता है। राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस हमें अपने शहीदों को नमन करने और यह दृढ़ संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम आतंकवाद को किसी भी रूप में पनपने नहीं देंगे। सरकार ने कठोर कानून, आधुनिक सुरक्षा उपायों और वैश्विक सहयोग से इस चुनौती का मुकाबला किया है, लेकिन असली शक्ति हमारी सामूहिक जागरूकता में है। हमें अपने आसपास के माहौल पर नज़र रखनी होगी, संदिग्ध गतिविधियों की सूचना देनी होगी और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना होगा।

21 मई का दिन केवल एक स्मृति का दिन नहीं, बल्कि एक चेतना और संकल्प का दिन है। यह हमें यह सिखाता है कि आतंकवाद के खिलाफ युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि हमारे घरों, स्कूलों, कार्यस्थलों और समाज में लड़ा जाना है। यह एक वैचारिक युद्ध है, जिसमें हमें अपने मूल्यों, एकता और सहानुभूति को हथियार बनाना होगा। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि हिंसा और कट्टरता किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। हमें उन्हें जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाना होगा, जो अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें।

राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस हमें एक ऐसे भारत की रचना करने की प्रेरणा देता है, जहाँ भय की छाया नहीं, बल्कि विश्वास और प्रेम का उजाला हो। यह दिन उन वीर शहीदों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने देश की एकता और अखंडता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। यह हमें सिखाता है कि शांति और प्रगति का रास्ता चुनौतीपूर्ण हो सकता है, पर असंभव नहीं। हर छोटा प्रयास—चाहे वह पड़ोस में सौहार्द कायम करना हो, भ्रामक प्रचार का डटकर मुकाबला करना हो, या समाज में जागरूकता का दीप जलाना हो—विशाल परिवर्तन की नींव रखता है। आइए, हम संकल्प लें कि आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर हम एक सुरक्षित, समृद्ध और स्वप्निल भारत का निर्माण करेंगे, जहाँ हर नागरिक बिना डर के अपने सपनों को साकार कर सके। यही हमारी अटूट ताकत है, जो आतंकवाद के अंधेरे को हराने का संबल देगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

शैतान को आत्म समर्पण न करो

जिन विचारों, सिद्धान्तों और कार्यों को मनुष्य सत्य, उचित एवं आवश्यक समझता है कभी-कभी वह उनके अनुसार कार्य नहीं कर पाता। परिस्थितियाँ और कमजोरियाँ उसे इस योग्य नहीं बनने देंगी कि जिन सिद्धान्तों को वह सत्य समझता हैं, उनके अनुसार व्यावहारिक जीवन को बना सके। वर्तमान वातावरण को पार करना उसे कठिन प्रतीत होता है।

ऐसी स्थिति में कितने ही लोग आत्म वंचना करने लगते हैं। हृदय जिस बात को अनुचित एवं असत्य समझता है बहस में उसी बात का पक्ष समर्थन करने लगते हैं। उस अनुचित को उचित सिद्ध करने के लिए उनका मस्तिष्क लम्बी चौड़ी वकालत करने लगता है और कई कई जोरदार

दलीलें इस ढंग से पेश करता है जिससे उसका पक्ष मजबूत हो जाय और यह मान लिया जाय कि मैं जिस कार्य को कर रहा हूँ वह अनुचित नहीं उचित है। यह मार्ग आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ही नीची श्रेणी का काम है। इसे शैतान को आत्म समर्पण करना कहा जा सकता है। मजबूरी की हालत में विवश होकर, दूसरों के दबाव या व्यक्तिगत स्वभाव संस्कारों की कमजोरी के कारण कोई ऐसा काम करना पड़ रहा है जो अनुचित प्रतीत होता है, तो यह आवश्यकता नहीं कि हम अनुचित को उचित सिद्ध करने का प्रयत्न करें। यह तो शैतान की वकालत होगी।

जो बात अनुचित है उसे हृदय में अनुचित ही मानिए। आप उसका त्याग नहीं कर पा रहे हैं यह दूसरी बात है। चूँकि हम बीमार हैं इसलिए बीमारी अच्छी चीजें हैं यह कहना या खुद समझना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं हैं। मनुष्य भूलों, कमजोरियों और बुराइयों से मुक्त नहीं है। आप भी उनसे मुक्त नहीं हैं।

परिवार, समाज की सबसे छोटी इकाई है जिसमें कुछ लोग मिलकर एक सामंजस्य बनातें हैं

सभी अपने-अपने सामर्थ्यानुसार/यथायोग्य सहयोग देकर अपना एवं अपने परिवार के पालन-पोषण करेंगें। परिवार का मतलब होता है जिसमें सभी एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर काम/सेवा/सहयोग द्वारा मैत्रीपूर्ण जीवन जी सकें। जब इस प्रस्तावना को स्वीकार किया गया था, तब पुरूष धनार्जन करने एवं स्त्री घर/भोजन/वस्त्र द्वारा परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल के लिए उपयुक्त थे। पुरूष बाहर से कमाकर लाता था और औरत उस कमाई का उचित उपयोग द्वारा घर/बच्चों की देखभाल करती थी। जब स्त्रियों को भी बाहर नौकरी करके लाना पड़ा, तब भी अपनी पुरानी सारी जिम्मेदारियां के साथ-साथ, बाहर की नयी जिम्मेदारियों को भी संभाला। जिससे तराजू के बराबर पलड़े असामान्य हो गयें हैं। तराजू का एक पक्ष विक्षिप्तता में और दूसरा पक्ष अति व्यस्तता का शिकार होता चला जा रहा है। इन पलड़ों का असंतुलन, कहीं-न-कहीं, अगली संतति को असंतुलित करती जा रही है। समाज की सबसे छोटी इकाई, गृहस्थी पूरे समाज के बरगद रूपी वृक्ष के लिए बीज/खाद/पानी का संचार करती है। शारीरिक रोगों का मूल कारण भी कहीं न कहीं, मानसिक व्यवस्था पर निर्भर करता है। समाज की विक्षिप्तता के रोग को निरूद्ध करने के लिए, ऐसा नहीं है कि हम पुरातन/पीछे की तरफ गति कर जायें। लेकिन समाज के रोगों का निवारण करने के लिए, हमें अपने इस नव संसार में, प्रेम/सौहार्द/साहचर्य के नवीन उपचारों का समागम करने की आवश्यकता है।

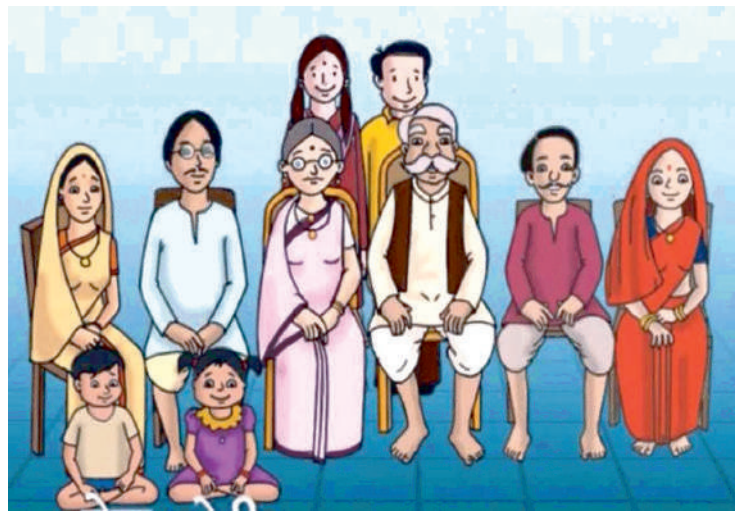

मासिक कालाष्टमी आज

हिंदू पंचांग के अनुसार, प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मासिक कालाष्टमी मनाई जाती है। यह दिन विशेष रूप से भगवान भैरव को समर्पित होता है, जो भगवान शिव का रौद्र रूप माने जाते हैं। मासिक कालाष्टमी पर विधिपूर्वक पूजा-अर्चना करने से सभी बाधाओं का नाश होता है और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

कब है मासिक कालाष्टमी?

वैदिक पंचांग के अनुसार, वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि की शुरुआत 20 मई को सुबह 05 बजकर 51 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन अगले दिन यानी 21 मई को सुबह 04 बजकर 55 मिनट पर होगा। ऐसे में मासिक कालाष्टमी का का व्रत 20 मई को रखा जाएगा।

कालाष्टमी पूजा विधि

इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

घर के मंदिर या भैरव मंदिर में भगवान काल भैरव की प्रतिमा या चित्र के सामने दीपक जलाएं।

उन्हें काले तिल, नारियल, सरसों का तेल और काले कपड़े अर्पित करें।

ॐ कालभैरवाय नमः मंत्र का जाप 108 बार करें।

भैरव जी को मदिरा, कुत्ते को रोटी और गुड़ खिलाना भी शुभ माना जाता है।

रात के समय भैरव चालीसा और काल भैरव अष्टक का पाठ करें।

मासिक कालाष्टमी का महत्व

मान्यता है कि कालाष्टमी पर भगवान भैरव की उपासना करने से व्यक्ति के जीवन से नकारात्मक ऊर्जा, बुरी शक्तियाँ, रोग, भय और शत्रुता समाप्त हो जाती है। यह दिन तांत्रिक साधना के लिए भी अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

शास्त्रों के अनुसार, भगवान शिव ने अपने उग्र रूप काल भैरव को तब उत्पन्न किया था जब ब्रह्माजी ने अहंकारवश मर्यादाओं का उल्लंघन किया था। इसलिए भैरव को 'दंडाधिकारी' के रूप में पूजा जाता है।

ऐसे करें महादेव को प्रसन्न

अगर आप वास्तु दोष का सामना कर रहे हैं, तो कालाष्टमी के दिन घर डमरू लाएं। इसके बाद कालाष्टमी की पूजा के समय डमरू बजाएं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस उपाय को करने से महादेव प्रसन्न होते हैं और वास्तु दोष दूर होता है।

भैरव देव मंत्र

1. ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।
2. ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय भयं हन।
3. ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय शत्रु नाशं कुरु।
4. ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय तंत्र बाधाम नाशय नाशय।
5. ॐ भं भैरवाय आप्दुद्धारानाय कुमारं रक्ष रक्ष।

शिवलिंग पर जल क्यों चढ़ाया जाता है, जाने

भगवान शिव के शिवलिंग पर जल चढ़ाने बहुत से लोग जाते हैं, लेकिन कुछ लोगों को पता नहीं होता कि शिवलिंग पर जल क्यों चढ़ाया जाता है, शिवलिंग पर जल कौनसे बर्तन से चढ़ाना चाहिए, जल चढ़ाते समय मुँह किस तरफ होना चाहिए, शिवलिंग पर जल चढ़ाने का सही तरीका क्या है और जल चढ़ाते समय कौन सा मंत्र बोलना चाहिए। अतः यहां यही जानकारी प्रस्तुत है-

समुद्र मंथन के बारे मे सब जानते हैं। जब देवता और राक्षस समुद्र मंथन कर रहे थे तो समुद्र से भयानक विष निकलने लगा था। उस विष को भगवान शिव ने धारण किया था। लेकिन उस विष के प्रभाव से शिवजी का शरीर बहुत गर्म हो गया और उनके शरीर से ज्वालाएं निकलने लगी।

उनकी गर्मी शांत करने के लिए सभी लोग उन पर जल चढ़ाने लगे। जब तक विष निकलता रहा तब तक शिवजी उस विष को ग्रहण करते रहे, और गर्मी शांत करने के लिए सभी लोग उन पर जल गिराते रहे। इससे शिवजी की गर्मी शांत हुई और वे बड़े प्रसन्न हुए। तब उन्होंने प्रण लिया कि जब भी कोई उन पर जल चढ़ाएगा वो उसके जीवन से हर प्रकार का संकट यानि विष ग्रहणू कर लेंगे। इसीलिए संकट निवारण, शिवजी की प्रसन्नता तथा आशीर्वाद के लिए शिवलिंग पर जल चढ़ाया जाता है।

कभी भी शिवजी को जल तेजी से नहीं चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों में भी बताया गया है कि शिवजी को जलधारा अत्यंत प्रिय है। इसलिए जल चढ़ाते समय ध्यान रखें कि जल के पात्र से धार बनाते हुए धीरे से जल अर्पित करें। पतली जलधार शिवलिंग पर चढाने से भगवान शिव की विशेष कृपा दृष्टि प्राप्त होती है।

यह बहुत महत्वपूर्ण है की शिवजी को जल अर्पण करते समय हमारा मुँह किस तरफ होना चाहिए। शिवजी को जल चढ़ाते समय हमारा मुँह उत्तर की तरफ होना चाहिए। जलहरी की दिशा (मुँह) हमेशा उत्तर की तरफ होती है। अतः हमे

जलधारी के मुँह के दूसरी तरफ रहना चाहिए।

सबसे पहले जलहरी के दाईं तरफ जल चढ़ायें वहाँ गणेशजी का स्थान होता है। फिर बाईं तरफ कार्तिकेयजी का स्थान होता है, वहाँ जल चढ़ाएं। इसके बाद दोनों के बीच शिवजी की पुत्री अशोक सुंदरी का स्थान होता है वहाँ जल चढ़ाएं। जलधरी का गोलाकार हिस्सा माता पार्वती का हस्तकमल होता है, उसे साफ करके वहाँ जल चढ़ाएं, इसके बाद शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।

पात्र मे भरा पूरा जल चढ़ा देना चाहिए। फिर भी बच जाए तो शिवजी के ऊपर यदि कलश हो तो जल उसमे डाल देना चाहिए।

शिवलिंग पर जल खड़े होकर चढ़ाना चाहिए या बैठकर यह इस पर निर्भर होता है कि शिवलिंग किस प्रकार का है। क्या आप जानते है की शिवलिंग कितने प्रकार के होते हैं। मंदिर मे शिवलिंग दो प्रकार के हो सकते हैं- शक्ति शिवलिंग और विष्णु शिवलिंग (हरी सर्वेश्वर शिवलिंग)

जिस शिवलिंग की जलहरी धरती से छूती हुई होती है वो शक्ति शिवलिंग होता है। इसकी जलहरी माता पार्वती का हस्त कमल होती है। ऐसे शिवलिंग पर बैठकर जल चढ़ाना चाहिए। जो शिवलिंग डमरू के आकार का होता है। जिसकी जलहरी धरती से थोड़ी ऊपर होती है। वो शिवलिंग विष्णु शिवलिंग कहलाता है। इसकी जलहरी ब्रह्माजी का हस्तकमल होती है जलहरी के नीचे बना आकार विष्णु जी का हस्तकमल होता है। ऐसे शिवलिंग पर खड़े होकर जल चढ़ाना चाहिए। खड़े रहकर जल चढ़ाते समय दोनों पैर बराबर नहीं रखना चाहिए। दायाँ पैर आगे और बायाँ पैर थोड़ा पीछे रखना चाहिए।

यह शंका लोगों के मन मे होती है कि शिवलिंग पर जल चढ़ाने का लोटा कौन सी धातु का होना चाहिए। जिस पात्र से शिवजी को जल चढ़ायें वह पत्र तांबे का या चांदी का होना चाहिए। तांबे का लोटा है तो इससे दूध नहीं चढ़ाना चाहिए। जल चढ़ाने के लिए स्टील के बर्तन का उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि स्टील लोहे से बना होता है।

शिव जी को जल अर्पित करते समय इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए-

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शन्कराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च।।

यदि इस मंत्र का उच्चारण ना कर पायें तो "ॐ नमः शिवाय" का जप भी कर सकते हैं।

।।शिव वंदना।।

त्रिलोचन तुम ही महादेव !

हे नीलकंठ हे अविनाशी।
तुमसे शोभित नगरी काशी।।

तुम रामेश्वर तुम सोमनाथ।
तुम डमरू के घोषित निनाद।।

केदारनाथ तुम ममलेश्वर।
तुम गौरापति तुम नागेश्वर।।

महाकाल तुम ओंकारेश्वर।
तुम विश्वनाथ काशीधीश्वर।।

तुम बैद्यनाथ की छवि धारे।
थे दुष्ट त्रिपुर राक्षस मारे।।

तुम मल्लिकार्जुन सरुप धरे।
भीमाशंकर कल्याण करें।।

तुम घृष्णेश्वर का दिव्य रुप।
त्र्यंबकेश्वर हो जगत भूप।।

सबको वरदानी आदिदेव।
त्रिलोक भारती ही हैं महादेव।।

हर हर महादेव

सिरदर्द में उपयोगी स्वादिष्ट पाक

सिरदर्द के मुख्यतः दो कारण हैं-

एक पित्त की अधिकता व दूसरा कब्ज।

इसमें दीर्घकाल तक सतत दर्द रहता है अथवा महीने-दो महीने या इससे अधिक समय पर सिरदर्द का दौरा सा पड़ता है।

इसके निवारण के लिए-

500 ग्राम बादाम दरदरा कूट लें।

100 ग्राम घी में धीमी आँच पर सेंक लें।

750 ग्राम मिश्री की गाढ़ी, लच्छेदार चाशनी बनाकर उसमें यह बादाम, जावंत्री, जायफल, इलायची, तेजपत्र का चूर्ण प्रत्येक 3-3 ग्राम

व 5 ग्राम प्रवालपिष्टी मिलाकर अच्छी तरह घोंट लें।

थाली में जमाकर छोटे-छोटे टुकड़े काटकर सुरक्षित रख लें।

10 से 20 ग्राम सुबह दूध अथवा पानी के साथ लें। (पाचनशक्ति उत्तम हो तो शाम को पुनः ले सकते हैं।)

खट्टे, तीखे, तले हुए व पचने में भारी पदार्थों का सेवन न करें।

बादाम अपने स्निग्ध व मृदु-विरेचक गुणों से पित्त व संचित मल को बाहर निकाल कर सिरदर्द को जड़ से मिटा देता है।

साथ में मस्तिष्क, नेत्र व हृदय को बल प्रदान करता है।

अमेरिकन बादाम जिसका तेल, सत्त्व निकला हुआ हो वह नहीं, मामरी बादाम अथवा देशी बादाम भी अपने हाथ से गिरी निकाल से इस्तेमाल करो तो लाभदायक है।

अमेरिकन बादाम का तेल गर्मी दे के निकाल देते हैं।

बौद्धिक काम करने वालों के लिए तथा शुक्रधातु की क्षीणता व स्नायुओं की दुर्बलता में भी यह बादामपाक अतीव लाभकारी है।

स्वस्थ व्यक्तियों के लिए सर्दियों में सेवन करने योग्य यह एक उत्तम पुष्टिदायी पाक है।

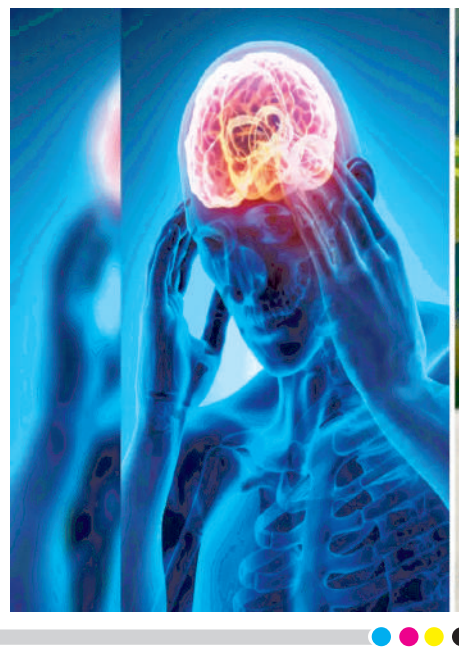

40 लाख लोगों को हो सकती है परेशानी, बसई और चंदू प्लांट पर बचा सिर्फ 3 दिन का पानी

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम में भीषण गर्मी के चलते पानी की खपत बढ़ने से पेयजल संकट गहरा गया है। चंदू बुढेड़ा और बसई वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में सिर्फ तीन दिन का पानी बचा है। नहरों से पानी की आपूर्ति बाधित होने पर स्थिति गंभीर हो सकती है। वर्तमान में पानी की मांग 650 एमएलडी से ऊपर है जबकि दोनों प्लांट की क्षमता 570 एमएलडी है।

गुरुग्राम : भीषण गर्मी में पानी की खपत बढ़ने और बर्बादी के कारण पेयजल संकट होने लगा है। खास बात यह है कि शहर के 40 लाख लोगों के लिए पेयजल आपूर्ति करने वाले चंदू बुढेड़ा और बसई वाटर ट्रीटमेंट प्लांट पर सिर्फ तीन दिन का पानी है।

दोनों प्लांटों को नहरी पानी की आपूर्ति करने वाले एनसीआर चैनल और जीडब्ल्यूस चैनल से अगर पानी की आपूर्ति बाधित होती है तो लोगों को पूरा पेयजल नहीं मिल पाएगा।

डेढ़ साल पहले भी आई थी समस्या

नहरी पानी प्लांटों को नहीं मिलने या कम आपूर्ति होने, बिजली के बड़े फाल्ट आने या किसी अन्य आपात स्थिति में गुरुग्राम में पीने के पानी की अचानक कमी होने पर तीन दिन से ज्यादा पानी की व्यवस्था दोनों प्लांटों में नहीं है। चंदू प्लांट की 1337.37 मिलियन लीटर और बसई प्लांट की 1385 मिलियन लीटर पानी की स्टोरेज क्षमता है।

बता दें कि डेढ़ साल पहले एनसीआर चैनल टूटने के कारण वाटर ट्रीटमेंट प्लांट को तीन दिन तक नहरी पानी नहीं मिलने के कारण परेशानी हुई थी। सिंचाई विभाग द्वारा जीडब्ल्यूएस चैनल को भी दोबारा तैयार किया जाना है, लेकिन फिलहाल काम शुरू नहीं हुआ है।

दो प्लांट से मिलता है नहरी पेयजल

नहरी पानी की आपूर्ति सिंचाई विभाग जीएमडीए के चंदू बुढेड़ा और बसई वाटर ट्रीटमेंट प्लांट को करता है। इन दानों प्लांटों की क्षमता 570 एमएलडी है। यह बल्क वाटर सप्लाई है। इन दोनों प्लांटों से शहर के बूस्टिंग स्टेशनों को पानी मिलता है, जोकि नगर निगम गुरुग्राम के हैं। यहां से आगे फिर पानी शहर के घरों में पहुंचता है।

570 एमएलडी क्षमता, मांग 650 से ऊपर पहुंची

दोनों प्लांटों की क्षमता 570 एमएलडी है और पानी की मांग इन दिनों 650 एमएलडी से ऊपर पहुंच गई है। इसके कारण शहर के कई क्षेत्रों में पेयजल संकट होने लगा है। प्लांट अपनी पूरी क्षमता पर चल रहे हैं। पानी की कमी को पूरा करने के लिए नगर निगम गुरुग्राम के लगभग 494 बोरवेल भी बने हुए हैं, जिनसे लगभग 100 एमएलडी पेयजल आपूर्ति कर पानी के अंतर को पूरा किया जाता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- 40 लाख शहर की जनसंख्या है।
- 300 एमएलडी चंदू बुढ़ेड़ा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता है।
- 100 एमएलडी क्षमता की नई यूनिट तैयार हो गई, जल्द इसे चालू किया जाना है।
- 270 एमएलडी बसई वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता है।
- 670 एमएलडी दोनों प्लांट की कुल क्षमता है।
- 700 एमएलडी से ज्यादा गर्मी में पानी की मांग हो जाती है।
- 494 बोरवेल नगर निगम के हैं।
- 100 एमएलडी पेयजल आपूर्ति बोरवेल से होती है।

नई यूनिट का ट्रायल पूरा, जल्द होगी चालू

यहां चार यूनिट है। एक नई यूनिट हाल ही में तैयार हुई है। गत रविवार को ट्रायल पूरा कर लिया गया है और जल्द इसे नियमित रूप से चालू किया जाएगा। इस प्लांट से सेक्टर 58 से 115 तक नहरी पेयजल की आपूर्ति होती है।

सेक्टर 75 से 80 सेक्टर में फिलहाल बूस्टिंग स्टेशन निर्माण और पेयजल नेटवर्क यानी लाइनें बिछाने का कार्य नहीं होने के कारण इनमें नहरी पेयजल की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। इन सेक्टरों के लिए सेक्टर 72 में बूस्टिंग स्टेशन निर्माणाधीन है।

बसई वाटर ट्रीटमेंट की यह है स्थिति

प्लांट की कुल क्षमता 270 एमएलडी है। यहां पर सौ-सौ एमएलडी की दो नई यूनिट का निर्माण होना है। सौ एमएलडी की एक यूनिट की डीपीआर बन चुकी है।

पूजा ने थाईलैंड में दिखाया छत्तीसगढ़ का जलवा

प्राइड ऑफ़ इंडिया इंटरनेशनल में पूजा राठौर रनर्स अप रहीं

परिवहन विशेष न्यूज

जांजगीर, छत्तीसगढ़। बहुमुखी प्रतिभा की पर्याय जांजगीर की पूजा राठौर ने थाईलैंड पटाया के ग्रैंड इम्पीरियर लिविंग में आयोजित प्राइड ऑफ इंडिया इंटरनेशनल में रनर्स अप का खिताब हासिल कर छत्तीसगढ़ का नाम गौरवान्वित किया है। पूनम प्रोडक्शन के बैनर तले पूनम गोकुपूरे के निर्देशन में आयोजित इस कॉम्पीटिशन की मिस मिसेस और किड्स कैटेगरी में भारत के अलावा पटाया के लोगों ने भी भारी संख्या में भागीदारी निभाई।

पूजा राठौर ने प्राइड ऑफ़ इंडिया की मिसेस कैटेगरी में भारतीय सभ्यता को दर्शाता माता सीता का किरदार एक राउंड में निभाकर छत्तीसगढ़ की संस्कृति

को थाईलैंड में पहचान दिलाई। पूजा राठौर किसी प्रतिभा की मोहताज नहीं हैं।

पिछले महीने रायपुर में न्यू उड़ान फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित फैशन शो में भी पूजा ने रनर्स अप का ख़िताब अर्जित कर सबको प्रभावित किया था। थाईलैंड में हुई कॉम्पीटिशन में अतुल, प्रदीप पाली और साक्षी रेवतकर ने निर्णायक की भूमिका निभाई। शो में भारत और थाईलैंड के मॉडल्स ने रनवे पर अपनी अदाओं से दर्शकों का दिल जीत लिया। इस भव्य आयोजन में मिस, मिसेस और किड्स कैटेगरी में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। पूजा राठौर ने माता सीता की भूमिका निभाकर भारतीय संस्कृति को थाईलैंड की पृष्ठभूमि तक पहुंचाकर छत्तीसगढ़ के साथ ही जांजगीर चांपा का नाम भी गौरवान्वित किया है।

दिल्ली पुलिस अकादमी, वज़ीराबाद परिसर में भव्य पासिंग आउट परेड का आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

दिल्ली पुलिस अकादमी, वज़ीराबाद परिसर में 124वीं बैच के 1308 पुरुष कार्यपालक रिक्रूट कॉन्स्टेबल्स की बेसिक ट्रेनिंग पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पासिंग आउट परेड का आयोजन किया गया। यह परेड उनके पुलिस सेवाओं में प्रवेश की औपचारिक शुरुआत को चिह्नित करती है।

124वीं बैच के 1308 कॉन्स्टेबल्स में से 42 स्नातकोत्तर डिग्रीधारी हैं – जिनमें 01 M.Sc., 4 M.Com., 35 M.A. और 2 MBA शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, 738 प्रशिक्षुओं ने स्नातक डिग्री प्राप्त की है, जिनमें B.Tech – 6, LLB – 2, और B.Ed – 19 शामिल हैं।

व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम को आधुनिक पुलिसिंग की चुनौतियों से निपटने के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया है। इसमें संविधान, आपराधिक कानून, अपराधशास्त्र, साइबर अपराध, जांच तकनीक, और फॉरेंसिक साइंस की गहन पढ़ाई शामिल है। विशेष ध्यान नए आपराधिक कानूनों की जानकारी पर दिया गया।

शारीरिक प्रशिक्षण, परेड ड्रिल, कमांडो ट्रेनिंग, निहत्था युद्ध एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण भी प्रशिक्षण का हिस्सा रहे। इसके साथ ही खिलाड़ियों की मानसिक एवं शारीरिक फिटनेस के लिए खेल, जिम, योग और ध्यान को भी महत्व दिया गया।

कमांडो कोर्स के अंतर्गत विस्फोटकों और IED की बुनियादी जानकारी, फील्ड क्राफ्ट, रेड एवं एंबुश तकनीक, और अर्बन इंटरवेंशन ट्रेनिंग दी गई।

आपदा प्रबंधन हेतु NDRF द्वारा मॉक ड्रिल समेत रेस्क्यू व राहत अभियानों की ट्रेनिंग दी गई। आर्थिक अपराधों की पहचान, जांच एवं रोकथाम के लिए भी विशेष कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

साइबर अपराध की रोकथाम, डिजिटल फॉरेंसिक और साइबर सुरक्षा पर भी व्यापक जानकारी दी गई। पशु संरक्षण, तनाव प्रबंधन और क्रोध नियंत्रण पर भी NGOs के माध्यम से विशेषज्ञ प्रशिक्षण दिया गया।

आईटी और कंप्यूटर प्रशिक्षण के अंतर्गत दिल्ली पुलिस के सभी ऐप्स और वेबसाइट्स के साथ-साथ CCTNS, ICJS और ICMS जैसे सिस्टम्स का गहन अध्ययन कराया गया।

मुख्य अतिथि का संबोधन – श्री रॉबिन हिबु, IPS, विशेष आयुक्त, पब्लिक ट्रांसपोर्ट सेफ्टी डिवीजन, दिल्ली मुख्य अतिथि श्री रॉबिन हिबु ने नव प्रशिक्षित कॉन्स्टेबल्स को प्रशिक्षण पूर्ण करने पर बधाई दी। उन्होंने नैतिक आचरण, अनुशासन और जनसेवा की भावना को सर्वोपरि रखने की सलाह दी। साथ ही आधुनिक तकनीक के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

स्वागत भाषण – श्री आसिफ मोहम्मद अली, IPS, संयुक्त निदेशक, दिल्ली पुलिस अकादमी उन्होंने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, वरिष्ठ अधिकारियों, प्रशिक्षु, उनके परिवारजनों और प्रशिक्षण स्टाफ का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को साहसपूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया।

विशिष्ट अतिथि – सुश्री कावेरी टंडन, निदेशक प्रभारी, राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय, गुजरात

विशेष उपस्थिति – श्री संजय कुमार, IPS, विशेष पुलिस आयुक्त (प्रशिक्षण), दिल्ली – जिनके मार्गदर्शन में यह प्रशिक्षण और समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

शपथ ग्रहण – शपथ का संचालन श्री जितेंद्र मणि, उप निदेशक-II, दिल्ली पुलिस अकादमी द्वारा किया गया।

कुल 14 कंटिन्जेंट्स ने परेड में भाग लिया। कंटिन्जेंट नं. 14 को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग कंटिन्जेंट घोषित किया गया और इसके ड्रिल प्रशिक्षक उपनिरीक्षक महेन्द्र सिंह को ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

रिक्रूट कॉन्स्टेबल्स की 124वीं बैच की कुल संख्या 4088 है, जिनमें से 1308 कॉन्स्टेबल्स ने 19 मई 2025 को वज़ीराबाद परिसर में परेड की। शेष 2780 कॉन्स्टेबल्स, 20 मई 2025 को झरोदा कलां में शपथ ग्रहण करेंगे।

मानसून से पहले तैयार होगा मल्टी यूटिलिटी कॉरिडोर, हजारों लोगों को ट्रैफिक जाम से मिलेगी राहत

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम में द्वारका एक्सप्रेसवे से मानेसर तक 5.5 किलोमीटर लंबे मल्टी यूटिलिटी कॉरिडोर का निर्माण 30 जून तक पूरा होने की उम्मीद है। जीएमडीए सेक्टर 81 से 95 तक सड़कों का निर्माण और ड्रेनेज नेटवर्क का जीर्णोद्धार कर रहा है। मल्टी यूटिलिटी कॉरिडोर बनने से जलभराव और ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी और निवासियों को सुविधा होगी।

गुरुग्राम। द्वारका एक्सप्रेसवे से मानेसर तक 5.5 किलोमीटर लंबे दोबारा निर्माणाधीन मल्टी यूटिलिटी कॉरिडोर का काम 30 जून तक पूरा होने की उम्मीद है। गुरुग्राम मेट्रोपालिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (जीएमडीए) के अधिकारियों का दावा है कि मानसून सीजन शुरू होने से पहले सेक्टर 81 से सेक्टर 95 तक चल रहे सड़क निर्माण के काम भी पूरे कर लिए जाएंगे।

जीएमडीए द्वारा इन सड़कों के किनारे पुराने बने ड्रेनेज नेटवर्क के जीर्णोद्धार का कार्य भी किया जा रहा है। नई सड़क बनाने के साथ ही पुरानी ड्रेन की मरम्मत होने से नए गुरुग्राम में जलभराव की परेशानी और ट्रैफिक जाम से राहत मिलने की उम्मीद है।

टूटी सड़कें हो रही चकाचक

बता दें कि पिछले वर्ष ड्रेन टूटी होने के कारण इस कॉरिडोर पर सिकंदरपुर मोड़, सेक्टर 86 में सती चौक, सेक्टर 90 चौक और कांकरौला गांव के समीप भारी जलभराव हुआ था। कांकरौला से एलान मॉल सेक्टर 84 तक कॉरिडोर का एक हिस्सा बनकर तैयार हो गया है। दूसरी तरफ सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है।

सेक्टर 91, 92, 85-86 में बनाई सड़कें जीएमडीए द्वारा सेक्टर 81 से 95 तक के सेक्टरों की पुरानी टूटी हुई सड़कों को दोबारा बनाने का कार्य चल रहा है। अधिकारियों का कहना है कि मानसून सीजन शुरू होने से पहले यह कार्य पूरे कर लिए जाएंगे।

मल्टी यूटिलिटी कॉरिडोर के क्षेत्र में डीएलएफ न्यू टाउन हाईट, रीगल गार्डन, स्काई कोर्ट, बेस्टेक संस्क्रुतिसहित सहित कई बड़ी सोसायटियां बसी हुई हैं। नई सड़कें बनने और ड्रेनेज नेटवर्क दुरुस्त होने से इन सोसायटियों के निवासियों को राहत मिलेगी।

आतंकवाद के जो साथ रहेगा, भारत उसका विरोध करेगा - भारत के 7 डेलिगेशन बनाम पाक का 1 शांति दूत

चीन, तुर्कीए, अज़रबैजान...पाक़ के भाईजान की बंद होगी भारत में दुकान–बॉयकॉट, ट्रेड, ट्रेवल्स व सामान वैश्विक स्तरपर अब भारत की आतंकवाद के खिलाफ़ स्ट्राइक– 7 डेलिगेशन से घेराबंदी, समर्थक देश की आर्थिक पाबंदी, न झुकेंगे न रुकेंगे की नीति सराहनीय

– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत की विदेश नीति कूटनीति की सराहना विश्व में तो ही रही है, यहां तक कि पाक के पूर्व पीएम ने भी इसकी तारीफ़ की थी, विकसित देश भी भारतीय कूटनीति की तारीफ़ के पुल बांध चुके हैं। अब भारत इसमें और एक अध्याय जोड़ने जा रहा है वह यह है कि हथियारों की लड़ाई में तो भारत ने झंडे गाढ़ दिए हैं अब बौद्धिक क्षमता से पूरे विश्व को कन्वेंस कर आतंकवाद के खिलाफ़ वार्तालाप कर अपनी वाणी से उन्हें कन्वेंस कर उन्हें सबूत तर्क देकर कूटनीति से अपनी विजय का ठप्पा लगवा कर आतंकवाद के खिलाफ विश्व के सभी देशों को एक मंच पर लाने की रणनीति को क्रियान्वयन किया जा रहा है, ताकि आतंक वाद का उनको पोषण करने वाले देश व उनका सहयोग कर उन्हें वित्त हथियार, ताकत व प्रोत्साहन देकर पोषित करने वाले देशों पर भी शाब्दिक, आर्थिक स्ट्राइक को क्रियान्वयन किया जा रहा है, उन देशों को यह एहसास कराया जा रहा है कि भारत अब पहले जैसा भारत नहीं रहा अब भारत आज का नया भारत है, इसीलिए ही 7 सर्वदलीय डेलिगेशन, चीन तुर्की अज़रबैजान पर भारत के नागरिकों द्वारा आर्थिक स्ट्राइक का फैसला लेना रेखांकित करने वाली बात है। चूंकि वैश्विक स्तरपर अब भारत की आतंकवाद के खिलाफ़ स्ट्राइक, 7 डेलिगेशन से घेराबंदी, समर्थक देश की आर्थिक पाबंदी, न झुकेंगे ना रुकेंगे नीति सराहनीय है, इसीलिए चीन तुर्कीए व अज़रबैजान..पाक के भाईजान की बंद होगी भारत में दुकान, बॉयकॉट ट्रेड ट्रेवल्स व सामान, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आतंक वाद के जो साथ रहेगा, भारत उसका विरोध करेगा, भारत के 7 डेलिगेशन बनाम पाक का 1 शांति दूत।

साथियों बात अगर हम आतंकवाद के बादशाह पाक की भारतके खिलाफ़ मदद करने वालों पर भारतीय नागरिकों द्वारा आर्थिक स्ट्राइक की करें तो, भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन, तुर्किए और अजरबैजान का असली चेहरा पूरी दुनियाँ के सामने आ गया, पाक ने इस दौरान भारत पर जो ड्रोन और मिसाइल दागे वो 'मेड इन' चाइना और तुर्किए थे, पाक ने जो चीन की फुस्स मिसाइल और तुर्किए के ड्रोन भारत पर हमले में इस्तेमाल किये, उनके अवशेष नई दिल्ली के पास मौजूद हैं, चीन और तुर्किए अब इन सबूतों को नकार नहीं सकता है। भारत ने जवाबी कार्रवाई में पाक को ऑपरेशन सिंदूर में ऐसी चोट दी कि वो घुटनों पर आ गया और सीजफायर के लिए कहा पाक को सबक सिखा दिया गया है, अब उसके 'भाईजान' चीन, तुर्किए और अजरबैजान की दुकान भारत में बंद करने की तैयारी हो रही है। साल 2023 से 20.7 पेर्सेंट ज्यादा पर्यटक तुर्किए में पहुंचे थे, पर्यटकों से तुर्किए का राजस्व लगभग 61.1 बिलियन डॉलर रहा, भारतीय पर्यटकों का औसत खर्च इसमें लगभग 972 डॉलर है, भारतीय पर्यटकों के बहिष्कार से तुर्किए को करीब 291.6 मिलियन डॉलर का नुकसान होने का अनुमान है, ये तो वो नुकसान नजर आ रहा है, लेकिन तुर्किए को भारत के खिलाफ जाने का अप्रत्यक्ष रूप से भी आर्थिक नुकसान होगा। तुर्किए एवं अज़रबैजान की यात्राओं के बहिष्कार के संबंध में कैट ट्रैवल एंड टूर ऑपरेटर्स संगठनों सहित विभिन्न अन्य संबंधित वर्गों से सम्पर्क कर इस अभियान को तेज करेगा, उधर दूसरी ओर तुर्की और अजरबेजान के साथ व्यापार बंद करने के मुद्दे पर अंतिम निर्णय आगामी 16 मई को कैट द्वारा नई दिल्ली में आयोजित देश के प्रमुख व्यापारी नेताओं के एक राष्ट्रीय सम्मेलन में लिया गया है। अज़रबैजान में भी काफी भारतीय पर्यटक पहुंचते हैं, जिससे वहां की अर्थव्यवस्था को काफी समर्थन मिलता है, उन्होंने बताया कि साल 2024 में कुल विदेशी आगमन लगभग 2.6 मिलियन पर्यटक था, जिसमें भारतीय पर्यटकों की संख्या लगभग 2.5 लाख थी और प्रति भारतीय पर्यटक औसत खर्चः 2,170 एज़ेडएन था, जो लगभग 1,276 डॉलर होता है, इस लिहाज से भारतीय पर्यटकों का खर्च 308.6 मिलियन डॉलर के लगभग अज़रबैजान में होता है, भारत अगर तुर्किए और अजरबैजान की इन दुकानों को बंद कर देता है, तो आर्थिक नुकसान होने से इन्हें अपनी नीतियों पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, इन देशों के होटल, रेस्तरां, टूर ऑपरेटर, और अन्य संबंधित व्यवसायों को भी नुकसान होगा। व्यापारियों के संगठन, कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने भी ऑपरेशन सिंदूर के मद्देनजर पाकिस्तान के लिए तुर्की और अजरबैजान के हालिया ₹समर्थन₹ का हवाला देते हुए, उनके साथ सभी व्यापार और वाणिज्यिक संबंधों का बहिष्कार करने का फैसला किया है।सीएआईटी ने शुक्रवार को कहा कि इस निर्णय में तुर्की और अज़रबैजानी वस्तुओं का राष्ट्रव्यापी बहिष्कार शामिल है, और भारत भर के व्यापारी इन देशों से आयात रोक रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारत पाक़ तनाव व युद्ध में पाक़ को समर्थन करने वाले देशों की करें तो, पहलगाम हमले के बाद बदलते हालात के बीच तुर्की ने पाक के समर्थन का ऐलान किया था। तुर्की के राष्ट्रपति ने पाक पीएम से बात कर उन्हें हर तरह की मदद की बात कही थी। ऐसी भी खबरें हैं कि तुर्की ने मिलिट्री ट्रांसपोर्ट विमानों के जरिए पाक को हथियारों की बड़ी खेप भेजी है। हालांकि, तुर्की ने इसका खंडन किया है। इतना ही नहीं, भारत से तनाव के बीच तुर्की के एयरफोर्स के कमांडर और खुफिया एजेंसी के प्रमुख ने पाक का दौरा भी किया था।भारत से तनाव के बीच चीन ने खुलकर पाक का समर्थन किया था। चीन ने कहा था कि वह पाकिस्तान की संप्रभुता का समर्थन करेगा और उसके साथ दोस्ती को कायम रखेगा। उसने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की अंतरराष्ट्रीय जांच की पाक की मांग का समर्थन भी किया था। गुरुवार को चीनी राजदूत ने पाक पीएम से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने ने चीनी राजदूत को भारत और पाकिस्तान के बीच हाल ही में हुए तनाव के बारे में जानकारी दी। इस दौरान राजदूत ने कहा कि चीन पाक की वैध सुरक्षा चिंताओं को समझता है और राष्ट्रीय संप्रभुता और सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए उसके प्रयासों का समर्थन करता है। अजरबैजान और पाक की दोस्ती जगजाहिर है। दोनों देश इस्लाम के नाम पर एक दूसरे का समर्थन करते हैं। अजरबैजान ने भी भारत से तनाव के बीच पाक का समर्थन किया। उसने कश्मीर को लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों का राग अलापा और शांति की अपील की। अजरबैजान ने पहलगाम हमले की पाक की अंतरराष्ट्रीय जांच की मांग की है और युद्ध की जगह वार्ता के जरिए समाधान तलाशने पर जोर दिया है।

साथियों बात अगर हम दोनों देशों के तनाव में भारत को समर्थन करने करने वाले देशों की करें तो, इजरायल ने पाक के साथ तनाव के बीच खुलकर भारत के समर्थन का इजहार किया है। पहलगाम हमले के तुरंत बाद इजरायल के पीएम भारत में इजरायली दूतावास, राजदूत और दूसरे वरिष्ठ इजरायली नेताओं ने इसकी निंदा की।उन्होंने भारतीय पीएम से बात कर अपनी संवेदना और समर्थन का इजहार भी किया। गाजा पट्टी में हमास के साथ युद्ध में उलझने के बावजूद इजरायल ने भारत को हर तरह की मदद का भरोसा दिया है।पहलगाम हमले के बाद इटली ने भी भारत का समर्थन किया है। इटली की पीएम ने इस घटना पर दुख जताया और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। इटली ने भारत को हर तरह के समर्थन का ऐलान भी किया है। जॉर्जिया मेलोनी के कार्यकाल में भारत और इटली के द्विपक्षीय संबंध काफी मजबूत हुए हैं। इटली यूरोपीय यूनियन का एक प्रमुख देश है। फ्रांस ने भी पहलगाम हमले के बाद भारत का समर्थन किया है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने पहलगाम हमले पर दुख जताया था और भारत को हर संभव मदद का ऐलान किया था। उन्होंने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की बात कही थी। फ्रांस दुनियाँ की महाशक्तियों में से एक होने के अलावा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य भी है। वह भारत का एक प्रमुख रक्षा साझेदार भी है।

साथियों बात अगर हम भारत के खिलाफ़ चीन के हवाई सुरक्षा सैटेलाइट व खुफिया जानकारी पाक़ को साझा करने की करें तो, जब भारत और पाकिस्तान की सेनाएं एक-दूसरे पर भारी पड़ने की जुगत में थीं, तब कोई तीसरा खिलाड़ी चुपके से मैदान में उतर आया। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, नई दिल्ली के सेंटर फॉर ज्वाइंट वारफेयर स्टडीज ने खुलासा किया कि चीन ने पाक को हवाई सुरक्षा, सैटेलाइट सपोर्ट और खुफिया जानकारी देकर इस जंग में उसका साथ दिया। चीन के सैटेलाइट के बदौलत पाक भारत के शहरों में ड्रोन और मिसाइल अटैक कर रहा था। साथियों बात अगर हम भारत के विरोध के कारण आईएमएफ द्वारा 18 मई 2025 को पाक़ के खिलाफ़ और 11 शर्तें लागू करने की करें तो भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच पाक को भारी-भरकम कर्ज देने के बाद अब अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमफ) को अब शायद अपना पैसा डूबने का खतरा महसूस होने लगा है. पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक, इसके चलते आईएम एफ ने अपने बेलआउट पैकेज की अगली किस्त जारी करने के लिए पाकिस्तान पर 11 नई शर्तें लगाई हैं और इसके बाद Pak पर कुल शर्तें बढ़कर 50 हो गई हैं। आईएमएफ की ओर से पाक को दो टूक कह दिया गया है कि अगर ये शर्तें पूरी नहीं होती हैं, तो फिर उसे अगली किश्त जारी नहीं हो सकेगी

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेष विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किआतंकवाद के जो साथ रहेगा, भारत उसका विरोध करेगा - भारत के 7 डेलिगेशन बनाम पाक का 1 शांति दूत।चीन, तुर्कीए, अज़रबैजान...पाक़ के भाईजान की बंद होगी भारत में दुकान-बॉयकॉट, ट्रेड, ट्रेवल्स व सामानवैश्विक स्तरपर अब भारत की आतंकवाद के खिलाफ़ स्ट्राइक-7 डेलिगेशन से घेराबंदी, समर्थक देश की आर्थिक पाबंदी, न झुकेंगे न रुकेंगे की नीति सराहनीय।

वोक्सवैगन गोल्फ जीटीआई 26 मई को होगी लॉन्च, जानें कैसे होंगे फीचर्स और कितनी हो सकती है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen भारत में जल्द ही नई Golf GTI लॉन्च करेगी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार यह गाड़ी 26 मई को लॉन्च हो सकती है और सीमित संख्या में ही उपलब्ध होगी। इसमें 2 लीटर का टीएसआई इंजन है जो 265 हॉर्स पावर देगा। Golf GTI में 12.9 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम और कई सेफ्टी फीचर्स भी मिलेंगे। अनुमानित कीमत 50 से 60 लाख रुपये हो सकती है।

नई दिल्ली। जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Volkswagen की ओर से कई सेगमेंट में भारत में कारों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर Volkswagen Golf GTI को लॉन्च किया जाएगा। इस गाड़ी को कब लॉन्च किया जाएगा। किस तरह के फीचर्स और इंजन को इसमें दिया जाएगा। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

इस तारीख को लॉन्च होगी Volkswagen Golf GTI

Volkswagen की ओर से Golf GTI कार को 26 मई को लॉन्च किया जा सकता है। कई मीडिया रिपोर्ट्स में इसकी जानकारी दी गई है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी को सीमित संख्या में ही बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया गया है। पांच मई 2025 से इसके लिए बुकिंग शुरू की गई थी जिसके बाद कई लोगों ने इसे बुक करवाया और निर्माता की ओर से अस्थाई तौर पर बुकिंग को रोक दिया गया है।

कितना दमदार इंजन

Volkswagen Golf GTI में दो लीटर की क्षमता के टीएसआई इंजन मिलेगा। इस इंजन से कार को 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में सिर्फ 5.9 सेकेंड का समय लगेगा। दो लीटर के इंजन से कार को 265 हॉर्स पावर और 370 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ ही इसमें 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन मिलेगा।

मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

Volkswagen Golf GTI में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा। इसमें 12.9 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, सात स्पीकर के साथ ऑडियो सिस्टम, वायरलेस चार्जर, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, एंबिएंट लाइट्स, पैनोरमिक सनरूफ, थ्री जोन क्लाइमेट कंट्रोल, रियर एसी वेंट्स, की-लैस एंट्री, पुश बटन स्टार्ट, जीटीआई बैजिंग, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, 18 इंच अलॉय व्हील्स, 45 लीटर की क्षमता के पेट्रोल टैंक को दिया जाएगा।

कितनी मिलेगी सुरक्षा

नई गाड़ी को काफी सुरक्षित बनाया जाएगा। इसके साथ ही इसमें सात एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल होल्ड असिस्ट, ब्रेक असिस्ट, इलेक्ट्रॉनिक फ्रंट डिफरेंशियल लॉक, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, लेन असिस्ट, फ्रंट असिस्ट, रियर व्यू कैमरा जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए जाएंगे।

कितनी होगी कीमत

RRB NTPC Exam Date 2025 Out? | Railway NTPC Exam Update | RRB NTPC Exam Latest UpdateRRB NTPC Exam Date 2025 Out? | Railway NTPC Exam Update | RRB NTPC Exam Latest Update

लॉन्च के समय ही इसकी सही कीमत की जानकारी मिल पाएगी। निर्माता इसे सीबीयू के तौर पर भारत लाएगी। ऐसे में संभावित एक्स शोरूम कीमत 50 से 60 लाख रुपये के आस पास हो सकती है। इसका मुकाबला मिनी कूपर जैसी कारों के साथ होगा।

टाटा हैरियर ईवी जून में होगी लॉन्च, जानें कितनी हो सकती है रेंज और कीमत, किन इलेक्ट्रिक एसयूवी से मिलेगी चुनौती

परिवहन विशेष न्यूज

बाजार में इलेक्ट्रिक एसयूवी की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से इस सेगमेंट में नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। जून 2025 में Tata Harrier EV को भी लॉन्च कर दिया जाएगा। इस एसयूवी में कैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। किन एसयूवी से इसे चुनौती मिलेगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से जून 2025 में नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर Tata Harrier EV को लॉन्च (Tata Harrier EV Launch Date) कर दिया जाएगा। निर्माता की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज दी जा सकती है। बाजार में इसका किन एसयूवी से मुकाबला होगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी Tata Harrier EV

इलेक्ट्रिक एसयूवी सेगमेंट में तीन जून 2025 को औपचारिक तौर पर Tata Harrier EV को लॉन्च (Tata Harrier EV Launch Date) कर दिया जाएगा। निर्माता की ओर से हाल में ही इसकी जानकारी सार्वजनिक की गई है। इसके पहले इसे ऑटो एक्सपो 2025 में पेश किया जा चुका है।

कैसे होंगे फीचर्स

Tata Harrier EV को इसके ICE वर्जन की तरह ही फीचर्स दिए जाएंगे। इसमें एलईडी हेडलाइट्स, कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, एलईडी फॉग लैंप, एलईडी कनेक्टिड टेल लाइट, पैनोरमिक सनरूफ, 360 डिग्री कैमरा, ADAS, 17 इंच अलॉय व्हील्स, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 12.3 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, फुल ऑटोमैटिक एसी, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, ईएसपी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, हेडलैंप लेवलिंग जैसे फीचर्स शामिल होंगे।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

निर्माता की ओर से नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर लॉन्च की जाने वाली Tata Harrier EV में 55 से 60 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया जा सकता है। जिससे इस एसयूवी को फुल चार्ज में 500 से 550 किलोमीटर के आस-पास की रेंज मिल सकती है। इसके साथ ही इसमें निर्माता की ओर से 4X4 जैसे फीचर को भी दिया जाएगा।

किनसे होगा मुकाबला

टाटा हैरियर ईवी को बाजार में Mahindra XEV9e, BYD Atto3, MG ZS EV जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी से सीधे तौर पर कीमत, फीचर्स, रेंज, डायमेंशन में चुनौती मिलेगी। इसके अलावा इसे Hyundai Creta Electric और जल्द लॉन्च होने वाली Maruti Suzuki E Vitara से भी कुछ मामलों में चुनौती मिल सकती है।

कितनी होगी कीमत

टाटा की हैरियर ईवी को तीन जून 2025 को लॉन्च किया जाएगा। तभी इसकी कीमत की सही जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे 22 लाख रुपये के आस-पास की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया जा सकता है। इसके अन्य वेरिएंट्स की एक्स शोरूम कीमत 25 से 27 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

हुंडई वेन्यू फेसलिफ्ट की टेस्टिंग के दौरान दिखी झलक, जानें कैसा होगा डिजाइन और कब तक हो सकती है लॉन्च

हुंडई की ओर से जल्द ही सब फोर मीटर एसयूवी Hyundai Venue Facelift को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसे हाल में ही टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक इसमें किस तरह के बदलाव होने की उम्मीद है। कीमत में कितना अंतर हो सकता है। Hyundai Venue Facelift को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही सब फोर मीटर एसयूवी Hyundai Venue Facelift को लाने की तैयारी की जा रही है। लॉन्च से पहले इसे पहली बार टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें किस तरह के बदलाव किए जा सकते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगी Hyundai Venue Facelift

हुंडई मोटर की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली एसयूवी Hyundai Venue के Facelift को अगले कुछ महीनों में भारतीय बाजार में लॉन्च किया जा सकता है। लॉन्च से पहले निर्माता की ओर से इसकी टेस्टिंग की जा रही है।

क्या मिली जानकारी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही एसयूवी के फेसिलफ्ट वर्जन को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। दिल्ली में इस गाड़ी की टेस्टिंग के दौरान एक्सटीरियर की जानकारी सामने आई है। हालांकि एसयूवी को पूरी तरह से कवर किया गया था, लेकिन फिर भी इसके कुछ फीचर और डिजाइन की जानकारी सामने आ गई है।

क्या होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से Hyundai Venue Facelift को इससे बड़े सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Hyundai Creta से प्रेरित होकर डिजाइन किया गया है। इसमें क्रेटा की तरह ही एलईडी हेडलाइट, कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, कनेक्टिड एलईडी टेल लाइट्स को दिया जाएगा। फ्रंट और रियर में पार्किंग सेंसर भी दिए जाएंगे।

मिलेंगे कई बेहतरीन फीचर्स

हुंडई की ओर से वेन्यू को काफी लंबे समय से बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है और अब इस गाड़ी में बदलाव की जरुरत भी है। जिसे देखते हुए नए वर्जन में कई ऐसे फीचर्स को भी ऑफर किया जा सकता है जो मौजूदा वेन्यू में नहीं मिलते हैं। इसमें 360 डिग्री कैमरा, ADAS Level-1, बेहतर इंफोटेनमेंट सिस्टम, नया इंटीरियर दिया जा सकता है।

इंजन में होगा बदलाव?

रिपोर्ट्स के मुताबिक एसयूवी के इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद कम है। इसमें मौजूदा वर्जन की तरह ही इंजन के विकल्प दिए जा सकते हैं। जिसके साथ मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को भी दिया जा सकता है।

कब तक होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से अभी इस एसयूवी के फेसिलफ्ट को लेकर कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि Hyundai Venue Facelift को फेस्टिव सीजन के आस-पास या साल के आखिर तक भारतीय बाजार में लाया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

मौजूदा वेन्यू की एक्स शोरूम कीमत 7.94 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.62 लाख रुपये तक है। लेकिन इसके फेसलिफ्ट की कीमत में कुछ हजार रुपये का ही अंतर हो सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

हुंडई वेन्यू को भारतीय बाजार में सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इसका सीधा मुकाबला Maruti Suzuki Brezza, Maruti Suzuki Fronx, Mahindra XUV 3XO, Kia Sonet, Kia Syros, Skoda Kylaq, Tata Nexon जैसी एसयूवी के साथ होता है।

हुंडई i20 का नया वेरिएंट मैग्ना कार्यकारी हुआ लॉन्च, मिलेगी मारुति, टोयोटा और टाटा की कारों को चुनौती, जानें कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई ने प्रीमियम हैचबैक हुंडई आई20 का नया Magna Executive वेरिएंट लॉन्च किया है। इस वेरिएंट में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। Magna वेरिएंट में अब सनरूफ भी मिलेगा। इसके अलावा Sports (O) वेरिएंट को भी अपडेट किया गया है। Magna Executive वेरिएंट की शुरुआती कीमत 7 .50 लाख रुपये है। इसका मुकाबला Maruti Suzuki Baleno और Tata Altroz से होगा।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली निर्माता हुंडई की ओर से प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Hyundai i20 के नए वेरिएंट को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया है। नए वेरिएंट को किस नाम से ऑफर किया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। किस कीमत पर i20 के नए वेरिएंट को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai i20 का नया वेरिएंट लॉन्च हुआ

Tata Altroz Facelift से पहले Hyundai ने प्रीमियम हैचबैक Hyundai i20 के नए वेरिएंट को लॉन्च कर दिया है। निर्माता की ओर से नए वेरिएंट को Magna Executive वेरिएंट नाम से ऑफर किया जा रहा है।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक Hyundai i20 के Magna Executive वेरिएंट में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है। इसमें स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग, ईएससी, वीएसएम, हिल होल्ड कंट्रोल, 15 इंच व्हील्स, टीपीएमएस, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर के साथ एमआईडी को शामिल किया गया है। इसके अलावा Magna वेरिएंट में अब iVT के साथ सनरूफ को भी ऑफर किया गया है। इस वेरिएंट में छह एयरबैग के साथ ही रियर एसी वेंट, एलईडी डीआरएल, फ्रंट सेंटर आर्मरेस्ट कंसोल के साथ स्टोरेज भी दी गई है।

Sports (O) वेरिएंट भी हुआ अपडेट

Hyundai i20 के Magna वेरिएंट के अलावा Sports (O) वेरिएंट में भी फीचर्स को अपडेट किया गया है। इस वेरिएंट में अब स्मार्ट की और पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप के साथ बोस के सात स्पीकर ऑडियो सिस्टम, इलेक्ट्रिक सनरूफ, FATC के साथ डिजिटल डिस्प्ले, Z शेप में एलईडी टेल लैंप को दिया गया है।

कितनी है कीमत

हुंडई की ओर से आई-20 के Magna Executive वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 7.50 लाख रुपये से शुरू की गई है और इसके टॉप वेरिएंट Magna iVT 8.89 लाख रुपये में ऑफर किया गया है। वहीं Sports (O) वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 9.05 लाख रुपये से 9.99 लाख रुपये के बीच रखी गई है।

किनसे है मुकाबला

हुंडई अपनी आई-20 कार को प्रीमियम हैचबैक कार सेगमेंट में ऑफर करती है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Suzuki Baleno, Toyota Glanza के साथ होता है। इस सेगमेंट में टाटा की ओर से भी Tata Altroz को ऑफर किया जाता है, लेकिन 22 मई को इसके Facelift को लॉन्च किया जाएगा, जिसके बाद i20 के साथ Tata Altroz Facelift का भी मुकाबला होगा।

होंडा रेबेल 500 क्रूजर बाइक हुई भारतीय बाजार में लॉन्च, मिला दमदार इंजन और बेहतरीन फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा ने भारतीय बाजार में अपनी नई क्रूजर बाइक Rebel 500 लॉन्च की है। इस बाइक में 471 सीसी का लिक्विड कूल्ड इंजन है जो 34 किलोवाट की पावर और 43 .3 न्यूटन मीटर का टॉर्क पैदा करता है। इसमें एलईडी हेडलाइट टेल लाइट और अन्य आधुनिक फीचर्स हैं। Honda Rebel 500 की एक्स-शोरूम कीमत 5 .12 लाख रुपये है और इसकी डिलीवरी जून 2025 से शुरू होगी।

नई दिल्ली। जापानी दो पहिया वाहन निर्माता होंडा की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही दमदार इंजन के साथ नई बाइक को लॉन्च किया गया है। होंडा की ओर से किस बाइक को किस तरह के फीचर्स और इंजन के विकल्प के साथ लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Honda Rebel 500 बाइक

जापानी दो पहिया निर्माता की ओर से 500 सीसी सेगमेंट में नई क्रूजर बाइक Honda Rebel 500 को भारत में लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से कुछ दिनों में ही इसकी डिलीवरी भी शुरू कर दी जाएगी।

कितना दमदार इंजन

Honda Rebel 500 बाइक में 471 सीसी की क्षमता का लिक्विड कूल्ड फोर सिलेंडर, आठ वॉल्व इंजन को दिया गया है। जिससे इस बाइक को 34 किलोवाट की पावर और 43.3 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। पैरलल ट्विन इंजन वाली इस बाइक में छह स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से नई बाइक में एलईडी हेडलाइट, एलईडी टेल लाइट, एलईडी इंडीकेटर, फ्रंट में टेलीस्कोपिक फॉर्क और रियर में ड्यूल शॉक एर्ब्जावर, दोनों पहियों में डिस्क ब्रेक, ड्यूल चैनल एबीएस, 16 इंच टायर, एलसीडी डिस्प्ले, 690 एमएम सीट हाइट जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

अधिकारियों ने कही यह बात

नई बाइक के लॉन्च पर होंडा मोटर साइकिल और स्कूटर इंडिया के सेल्स और मार्केटिंग के डायरेक्टर योगेश माथुर ने कहा कि हम भारत में रेबेल 500 लाने पर बहुत उत्साहित हैं। यह एक ऐसी मोटरसाइकिल है जिसका राइडिंग के शौकीनों को सालों से इंतजार था और अब यह आखिरकार आ गई है। आपको अपनी अलग पहचान दिखाने के लिए डिज़ाइन की गई रेबेल 500 में आधुनिक टच के साथ टाइमलेस क्रूजर स्टाइलिंग का मिश्रण दिया गया है, जो इसे भीड़ से अलग बनाता है। अपनी अनूठी सड़क उपस्थिति, टॉर्की इंजन और आरामदेह एर्गोनॉमिक्स के साथ, रेबेल 500 उन सवारों के लिए एकदम सही है जो एक ऐसी मशीन की तलाश में हैं जो आकर्षक होने के साथ-साथ उनकी आत्मा का एक अनूठा विस्तार भी हो।

कितनी है कीमत

Honda Rebel 500 को सिर्फ एक ही वेरिएंट में लॉन्च किया गया है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 5.12 लाख रुपये रखी गई है। इस बाइक को होंडा की प्रीमियम डीलरशिप बिग विंग के जरिए ऑफर किया जाएगा। फिलहाल बाइक के लिए बुकिंग शुरू कर दी गई है और इसकी डिलीवरी जून 2025 से शुरू कर दी जाएगी।

किनसे होगा मुकाबला

होंडा की नई बाइक रिबेल 500 को 500 सीसी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। इस बाइक का भारतीय बाजार में सीधा मुकाबला Royal Enfield Classic 650, Shotgun 650, Super Meteor 650 और Kawasaki Eliminator जैसी क्रूजर बाइक्स के साथ होगा।

हरित ऊर्जा उत्पादन के नए आयाम

विजय गर्ग

तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में, जहां जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा की चिंता बढ़ रही हैं, वहीं भारत ने हरित हाइड्रोजन की दिशा में एक साहसिक कदम उठाया है। हरित हाइड्रोजन को अक्सर भविष्य का ईंधन कहा जाता है। भारत इसे साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाना चाहता है। इस दिशा में एक अहम पड़ाव तब आया, जब हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित ' एक राष्ट्रीय कार्यशाला के दौरान हरित हाइड्रोजन प्रमाणन योजना का शुभारंभ किया गया। यह योजना भारत के राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का अभिन्न अंग है। यह एक स्वच्छ ऊर्जा वाहक है, जिसका अर्थ है कि इस ऊर्जा को संग्रहीत कर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन यह ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत नहीं है। जब हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है, तो यह केवल पानी छोड़ता जिससे कोई हानिकारक उत्सर्जन नहीं होता। यह इसे जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला, तेल और गैस का एक आकर्षक विकल्प बनाता है, जो जलाने पर कार्बन डाइआक्साइड और अन्य प्रदूषक उत्सर्जित करते हैं।

हाइड्रोजन के उत्पादन के तरीके आधार पर इसे आमतौर पर रंगों से पहचाना जाता है। 'ग्रे 'ग्रे हाइड्रोजन' में प्राकृतिक गैस या अन्य जीवाश्म ईंधनों का उपयोग कर हाइड्रोजन निकाला जाता है। इस प्रक्रिया में बड़ी मात्रा में कार्बन डाइआक्साइड उत्सर्जित होती है, जो ग्रीनहाउस गैस है और जलवायु परिवर्तन में योगदान करती है। इसलिए, ग्रे हाइड्रोजन स्वच्छ नहीं है। ब्लू हाइड्रोजन भी जीवाश्म ईंधनों (आमतौर पर प्राकृतिक गैस) से ही उत्पादित होता है, लेकिन इस प्रक्रिया में उत्सर्जित होने वाली कार्बन डाइआक्साइड को किसी तरह संग्रहीत कर लिया जाता है। यदि यह प्रभावी ढंग से किया जाता है, तो ब्लू हाइड्रोजन का उत्सर्जन ग्रे हाइड्रोजन की में काफी कम तुलना है, लेकिन होता। यह पूरी तरह से उत्सर्जन मुक्त नहीं है और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भर है। वहीं ग्रीन हाइड्रोजन, हाइड्रोजन का सबसे वांछनीय और स्वच्छ रूप है ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन पानी के इलेक्ट्रोलिसिस द्वारा किया जाता है। इस प्रक्रिया में पानी को हाइड्रोजन और आक्सीजन में विभाजित करने के लिए बिजली का उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में कोई जीवाश्म ईंधन नहीं जलता और बिजली नवीकरणीय स्रोतों से आती है, इसलिए ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन लगभग उत्सर्जन मुक्त होता है। यही कारण है कि इसे हरित कहा जाता है।

।हाइड्रोजन का उत्पादन घरेलू स्तर पर किया जा सकता है, खासकर भारत विशाल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता (सौर और पवन) का उपयोग करके। यह जीवाश्म ईंधन आयात पर निर्भरता को कम करेगा और देश की ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाएगा। भारत दुनिया के सबसे बड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जकों में से एक है। अपने जलवायु लक्ष्यों पूरा करने और पेरिस समझौते के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए, भारत को अपने उत्सर्जन में भारी कमी लाने की आवश्यकता है। हरित हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था के विकास से नए उद्योग, विनिर्माण इकाइयां और सेवा क्षेत्र विकसित होंगे। इससे बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर पैदा होंगे, जिनमें नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण और संचालन, हाइड्रोजन पाइपलाइन बिछाना और हरित हाइड्रोजन के उपयोग के लिए नई प्रौद्योगिकियों का विकास शामिल है। जैसे-जैसे वैश्विक स्तर पर हरित हाइड्रोजन की मांग बढ़ेगी, भारत अपनी बड़ी उत्पादन क्षमता का लाभ उठा कर हरित हाइड्रोजन और इससे बने उत्पादों (जैसे ग्रीन अमोनिया) का निर्यात कर सकता है। यह देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का बड़ा स्रोत बन सकता है। इन सभी महत्त्वों को पहचानते हुए, भारत सरकार ने चार जनवरी 2023 को राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन को मंजूरी दी। यह मिशन भारत को हरित हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग और निर्यात के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाने की महत्त्वाकांक्षी पहल है। मिशन के प्रमुख उद्देश्यों मे, 2030 तक कम से कम पचास लाख मीट्रिक टन प्रतिवर्ष हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करना और जीवाश्म ईंधन आयात में एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की कमी लाना है। हरित हाइड्रोजन प्रमाणन योजना पारदर्शिता और विश्वसनीयता का आधार है। योजना का मुख्य कार्य इस बात को प्रमाणित करना है कि उत्पादित हाइड्रोजन वास्तव में हरित है। यह उत्पादन प्रक्रिया में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की एक निश्चित सीमा निर्धारित करके किया जाएगा। केवल वही हाइड्रोजन जो इस सीमा से कम उत्सर्जन के साथ उत्पादित होता है, उसे हरित हाइड्रोजन के रूप में प्रमाणित किया जाएगा। प्रमाणन योजना यह सुनिश्चित करेगी कि बाजार में बेचे जाने वाले हाइड्रोजन' 'के' दावे सच्चे हैं और वे एक निर्धारित पर्यावरणीय मानक को पूरा करते हैं। साथ ही प्रमाणन योजना एक तंत्र स्थापित करेगी, जिससे यह पता लगाया जा सके कि हाइड्रोजन कहां और कैसे उत्पादित किया गया था। जब उपभोक्ताओं, उद्योगों और अंतरराष्ट्रीय भागीदारों को यह विश्वास होगा कि प्रमाणित हरित हाइड्रोजन वास्तव में स्वच्छ है, तो बाजार का विकास तेजी से होगा। प्रमाणन एक गुणवत्ता आश्वासन मुहर की तरह काम करेगा।

हरित हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था के विकास और प्रमाणन योजना के कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियां भी हैं। दरअसल, वर्तमान में, ग्रे हाइड्रोजन की तुलना में हरित हाइड्रोजन का उत्पादन महंगा है। लागत कम करने के लिए प्रौद्योगिकियों को परिष्कृत करने और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं को प्राप्त करने आवश्यकता है। हरित हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण और परिवहन के लिए विशाल नए बुनियादी ढांचे के निर्माण की आवश्यकता होगी। उत्पादन, गुणवत्ता और र सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों को विकसित करन ₹और उनका पालन करना महत्त्वपूर्ण है। प्रमाणन योजना इस दिशा में एक बड़ा कदम है। हरित हाइड्रोजन क्षेत्र के लिए कुशल जनशक्ति तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। भारत सरकार इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्रिय कदम उठा रही है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के तहत प्रोत्साहन और बुनियादी ढांचा विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

हरित हाइड्रोजन भारत के स्वच्छ ऊर्जा भविष्य का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। भारत का राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन इस क्षमता को साकार करने लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।हरित हाइड्रोजन प्रमाणन योजना का शुभारंभ इस मिशन की दिशा में एक निर्णायक कदम । इस योजना का शुभारंभ भारत की हरित हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह न केवल भारत के 2030 तक पचास लाख मीट्रिक टन हरित हाइड्रोजन उत्पादन के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगा, बल्कि भारत को वैश्विक हरित हाइड्रोजन परिदृश्य में एक विश्वसनीय और अग्रणी खिलाड़ी के रूप में स्थापित करेगा। जैसे-जैसे दुनिया स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ रही है, भारत का हरित हाइड्रोजन मिशन और उसकी प्रमाणन योजना एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह दिखाता है कि कैसे एक राष्ट्र अपनी ऊर्जा चुनौतियों का सामना, आर्थिक अवसर पैदा और पर्यावरण की रक्षा भी कर सकता है। यह हरित ऊर्जा का एक नया अध्याय है, और भारत इस अध्याय को लिखने के लिए पूरी तरह तैयार है।

डॉ सत्यवान सौरभ की कविताएँ

फोकस का फरेब

सारी दुनिया को धुंधला करके,
जिसे तुम फोकस करोगे,
वो एक दिन तुम्हारे ही लम्हों को,
अलग फ्रेम में कैद कर देगा।

जो आज नज़रों का मरकज़ है,
कल उसी की नज़रों में हाशिए पर होगे,
जिसे पूरा कैनवास देकर इतराए थे,
वही तुम्हें एक कोने में टांग देगा।

तस्वीरें भी वफादार नहीं होतीं,
हर पिक्सल में बदलती हैं,
कभी हंसी की झलक, कभी आंसू की फुहार,
तो कभी खामोशियों का शोर बन जाती हैं।

इसीलिए संभलना, फोकस की दुनिया में,
जहां हर क्लोज़-अप के पीछे,
एक छिपा हुआ बैकग्राउंड होता है,
जो कभी न कभी सब उजागर कर देता है।

प्रिया

वो शब्दों का नर्तन,
भावनाओं का स्पंदन,
मौन में छिपी पुकार,
और लहरों सा अनुगमन।

वो सर्द हवाओं की सरसराहट,
मन की गहराइयों में उलझन,
सच की मीठी कड़वाहट,
और कल्पनाओं का अडिग अनुशासन।

वो चुपके से आंखों में ठहर जाना,
बिन कहे दिल तक उतर जाना,
कभी जलते सूरज की आंच,
तो कभी चांदनी सा ठंडा एहसास।

वो जो शब्दों में बंध जाए तो काव्य,
और मन में बस जाए तो प्रिया।

संदेह की दृष्टि

हर चेहरा अब सवालों में घिरा,
हर कदम पर शंका का साया,
ईमानदारी की चादर इतनी पतली,
कि आर-पार दिख जाए दुनिया का तमाशा।

नज़रें टटोलती हैं हर आचरण को,
जैसे पत्तों के पीछे छिपी हो आंधी,
किस पर भरोसा करें, किस पर न करें,
हर इंसान पर एक सवालिया निशान खींचा है।

जहां विश्वास का सूरज ढल रहा हो,
वहां चरित्र की परछाइयां लंबी हो जाती हैं,
सफ़ाई भी संदेह में डूबी लगती है,
सच्चाई भी जैसे झूठ की चौखट से गुज़रती है।

हां, दोष किसमें नहीं होते,
पर क्या हर गुण भूल जाना ही उचित है?
जब शक की खिड़कियां बंद हो जाएं,
तो रिश्तों की हवा भी थम जाती है।

चलो, एक बार फिर से भरोसे की रौशनी जलाएं,
संदेह के परदे हटाएं, विश्वास के किवाड़ खोलें,
क्योंकि हर शक के पीछे,
कभी-कभी सच्चाई भी शर्माती है।

सोशल मीडिया का परदा

हर दर्द, हर जश्न, हर आह, हर फिक्र,
अब पोस्ट की शक्ल में, दुनिया को नज़र आता है।
जो दिल की बात थी, अब स्टेटस बन गई,
जो आंसू का कतरा था, अब 'लाइव' चलाता है।

ख़ुद को प्राइवेट कहने वाले,
फोटो में चेहरा, कैप्शन में दिल रख आए,
लीवर, किडनी, फेफड़े बचा कर क्या करेंगे,
जब अपने ज़ख्म भी पोस्ट पर सजा कर आए।

दोस्तों की महफ़िलें, अब कॉमेंट की कतारों में,
रिश्ते के राज़, अब 'टैग' की दीवारों में।
मोहब्बतें भी 'डीपी' से जाहिर हैं,
नफ़रतें 'रिप्लाई' में वाहिर हैं।

शायद आने वाले कल में,
बस यही बचेंगी निजी बातें,
लीवर, किडनी, फेफड़े,
बाकी तो सब 'स्टोरी' की मेहरबानी में हैं।

- डॉ सत्यवान सौरभ

अब चीन से आयात नियंत्रण जरूरी

यकीनन पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कार्रवाई पर चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा दिखाई दिया। चीन ने न केवल पाकिस्तान को पूर्ण समर्थन दिया, वरन् चीन ने पाकिस्तान को मिसाइलों सहित विभिन्न हथियारों की सीधी आपूर्ति भी की। दुनिया में रेखांकित हो रहा है कि चीन निर्मित जिन हथियारों का पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ प्रयोग किया, वे सभी हथियार जल, थल और नभ में मौजूद पराक्रमी भारतीय सेना और प्रभावी भारतीय सैन्य व्यवस्था को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचाने में नाकाम रहे। चीन अप्रत्यक्ष रूप से भारत को तेजी से आर्थिक शक्ति बनने से रोकना चाहता है। ऐसे में अब भारत के द्वारा पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंधों की कड़ाई के साथ भारत के साथ शत्रुपूर्ण आचरण कर रहे चीन से वर्ष-प्रतिवर्ष तेजी से बढ़ते हुए आयातों को नियंत्रित करके चीन को भी आर्थिक सबक दिया जाना जरूरी है। हाल ही में प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक चीन के साथ द्विपक्षीय कारोबार में भारत लगातार घाटे की स्थिति में बना हुआ है। पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में चीन को भारत का निर्यात 14.5 प्रतिशत घटकर 14.25 अरब डॉलर रह गया, जबकि 2023-24 में यह 16.66 अरब डॉलर था। इतना ही नहीं, चिंताजनक यह भी है कि चीन से 2024-25 में आयात 11.52 प्रतिशत बढक़र 113.45 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2023-24 में यह 101.73 अरब डॉलर था। चीन के साथ व्यापार घाटा पिछले वित्त वर्ष में करीब 17 प्रतिशत बढक़र 99.2 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 में 85.07 अरब डॉलर था। चीन 2024-25 में 127.7 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा। दोनों देशों के बीच 2023-24 में 118.4 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था।

चीन पर निर्भरता कम करने के जो रणनीतिक कदम उठाए गए हैं, उनका अभी जमीनी तौर पर कोई विशेष असर नहीं दिखा है। अब आतंकी देश पाकिस्तान को विश्व मंच पर खुला समर्थन दे रहे चीन के साथ कोई छह माह पूर्व भारत ने मित्रता की जिस राह को आगे बढ़ाया था, अब उस राह को रोकते हुए चीन के साथ कारोबार असंतुलन को कम करने के लिए हरसंभव कदम उठाए जाने जरूरी हैं। गौरतलब है कि पिछले वर्ष 31 अक्टूबर को खुशियों के महापर्व दीपावली के दिन भारत-चीन सीमा पर भारत-चीन दोनों देशों के सैनिकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर दीपावली मनाई थी। इस खुशी का कारण यह था कि पिछले वर्ष 23 अक्टूबर को रूस के कजान में 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच सार्थक और सफल द्विपक्षीय वार्ता हुई और पांच साल बाद हुई इस वार्ता में दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर जोर दिया था। दोनों नेताओं ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैन्य गतिरोध को हल करने के लिए समझौते का स्वागत किया और अधिकारियों को लद्दाख में सीमा विवाद सुलझाने के लिए आगे बातचीत जारी रखने के निर्देश दिए। यही कारण रहा कि इस वार्ता के बाद सैन्य स्तर पर तत्परतापूर्वक क्रियान्वयन के साथ डेमचोक और डेपसांग मैदानी क्षेत्रों में टकराव वाले बिंदुओं से सैनिकों की पूर्ण वापसी के बाद से लगातार पेट्रोलिंग हो रही है। यद्यपि चीन से भारत के नए सैन्य समझौते के बाद भारत को चीन से आयातों के ढेर से बचने के लिए फूंक-फूंक कर कदम रखना जरूरी दिखाई दे रहा थे, लेकिन भारत ऐसा नहीं कर पाया और चीन से आयात माह-प्रतिमाह बढ़ते गए हैं। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि चीन पाकिस्तान को आतंकी प्रोत्साहन देते हुए भारत की तेजी से बढ़ती आर्थिकी की राह में बाधक बनना चाहता है। चीन देख रहा है कि भारत आर्थिकी को तेजी से आगे बढ़ा रहा है और भारत अपनी बढ़ती आर्थिक साख व आर्थिक तेजी से इसी वर्ष 2025 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिकी बनते हुए दिखाई देगा। 6 मई को प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की विश्व आर्थिक परिदृश्य से जुड़ी रिपोर्ट के अनुसार, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इसी वर्ष 2025 के अंत तक भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। उस समय देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बढक़र 4.187 ट्रिलियन डालर हो जाएगी और यह जापान की जीडीपी 4.186 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा होगी।

इतना ही नहीं, रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास की ऊंची दर से भारत की जीडीपी 2028 में बढक़र 5.584 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी और भारत जर्मनी को पीछे छोडक़र दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसी तरह हाल ही में वैश्विक रेटिंग एजेंसी मॉर्निंगस्टार डीबीआरएस ने भारत की सॉवरेन रेटिंग को निम्नतम निवेश ग्रेड 'बीबीबी ;कमद्धष्से एक पायदान ऊपर उठाकर ष्बीबीबीष्कर दिया है। रेटिंग प्रवृत्ति को भी 'सकारात्मक' से 'स्थिर' कर दिया गया है। इस रेटिंग एजेंसी ने उन्नयन के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश और डिजिटलीकरण, राजकोषीय समेकन, व्यापक आर्थिक स्थिरता के साथ सतत उच्च विकास और एक लचीली बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से देश के संरचनात्मक सुधारों का हवाला दिया है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि दुनिया के उभरते हुए देशों की तुलना में भारत की अर्थव्यवस्था सबसे तेजी से आगे बढ़ रही है। माह अप्रैल 2025 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का संग्रह 2.09 लाख करोड़ रुपए स्तर पर पहुंच गया, जो किसी महीने अभी तक का सर्वाधिक रिकॉर्ड राजस्व है। पिछले वर्ष 2024-25 में जीएसटी और इनकम टैक्स संग्रहण रिकॉर्ड ऊंचाई पर रहा है।

निश्चित रूप से भारत को आर्थिक रूप से आगे बढने से रोकने और भारत के साथ शत्रुपूर्ण व्यवहार कर रहे चीन से व्यापार घाटा कम करने के लिए सरकार के द्वारा और अधिक कारगर प्रयास करने होंगे। इसमें कोई दो मत नहीं हैं कि पिछले एक दशक से स्वदेशी उत्पादों को हरसंभव तरीके से प्रोत्साहित करके चीन से आयात घटाने के प्रयास हुए हैं। वर्ष 2019 और 2020 में चीन से तनाव के कारण जैसे-जैसे चीन की भारत के प्रति आक्रामकता और विस्तारवादी नीति सामने आई, वैसे-वैसे स्थानीय उत्पादों के उपयोग की लहर देश भर में बढ़ती हुई दिखाई दी। प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा बार-बार स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करने और वोकल फॉर लोकल मुहिम के प्रसार ने स्थानीय उत्पादों की खरीदी को पहले की तुलना में अधिक समर्थन दिया है। अब एक बार फिर से देश के करोड़ों लोगों को चीनी उत्पादों की जगह स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के नए संकल्प के साथ आगे बढना होगा। हम उम्मीद करें कि भारत के द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान पर प्रचंड प्रहार के दौरान पाकिस्तान के द्वारा जिस तरह चीन के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग हुआ है, उसके मद्देनजर भारत के द्वारा अब पाकिस्तान को आर्थिक प्रतिबंधों से पस्त करते हुए चीन से भी हरसंभव तरीके से आयात नियंत्रण किए जाएंगे। निश्चित रूप से चीन के लिए भारत के व्यापक बाजार में आयातों में कमी एक आर्थिक प्रहार के रूप में दिखाई देगी और इससे भारत के स्वदेशी उद्योग तथा एमएसएमई लाभान्वित होते हुए भी दिखाई देंगे।

तांबा मजबूत हड्डियों और सुंदर त्वचा के लिए आवश्यक है।

मजबूत हड्डियों और खूबसूरत त्वचा के लिए जरूरी है कॉपर, ये फूड्स करेंगे इसकी कमी को दूर लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्लीः हाल ही में आपने तांबे का इस्तेमाल करने वाले फिल्टर के कई विज्ञापन देखे होंगे। हालाँकि, यह खनिज कई चीजों में प्राकृतिक रूप से भी पाया जाता है। इसे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। आइए जानते हैं इसकी कमी से क्या-क्या समस्याएं हो सकती हैं और इसकी कमी को दूर करने के क्या उपाय हैं।

मिट्टी में पाया जाता है

तांबा एक खनिज है और प्राकृतिक रूप से मिट्टी में पाया जाता है। हमारा शरीर तांबा नहीं बना सकता और जीवित रहने के लिए मनुष्य को इसकी आवश्यकता होती है। ऐसे में हम भोजन के जरिए इस कमी को पूरा कर सकते हैं।

तांबा त्वचा के लिए एक आवश्यक खनिज है। इसकी कमी से मेलेनिन कम हो सकता है, जो आपकी त्वचा का रंग बनाता है। इसकी कमी से हाइपोपिग्मेंटेशन या त्वचा का रंग हल्का हो सकता है। कुछ प्रमाण बताते हैं कि तांबा, जस्ता और लोहा मुँहासे, सोरायसिस और एक्जिमा जैसी त्वचा संबंधी समस्याओं के उपचार में भूमिका निभा सकते हैं।

हीमोग्लोबिन बनाने के लिए तांबे की आवश्यकता होती है, जो शरीर के ऊतकों तक ऑक्सीजन पहुंचाने में मदद करता है। हीमोग्लोबिन की कमी से एनीमिया का खतरा रहता है। हालाँकि, आयरन और विटामिन बी 12 की कमी के कारण एनीमिया का खतरा भी रहता है।

प्रतिरक्षा के लिए आवश्यक

तांबे की कमी से श्वेत रक्त कोशिकाओं का स्तर कम हो जाता है, जिसे न्यूट्रोपेनिया कहा जाता है। श्वेत रक्त कोशिकाओं की कमी के कारण आपका शरीर संक्रमण से लड़ने में सक्षम नहीं होता है। यदि आपके शरीर में कार्बन का स्तर कम है, तो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली बैक्टीरिया और अन्य रोग पैदा करने वाले कारकों से आपकी रक्षा करने में सक्षम नहीं है।

हड्डियां भी मजबूत बनती हैं।

यद्यपि कैल्शियम मजबूत हड्डियों के निर्माण के लिए एक प्रसिद्ध खनिज है, लेकिन मजबूत हड्डियों के निर्माण के लिए तांबे सहित अन्य पोषक तत्वों की भी आवश्यकता होती है। शरीर में तांबे का भंडार बहुत कम मात्रा में होता है, तथा इसका दो-तिहाई भाग आपकी हड्डियों और मांसपेशियों में जमा होता है। तांबा हड्डियों के समुचित विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इसकी कमी से ऑस्टियोपोरोसिस हो सकता है।

तांबे की बड़ी मात्रा की आवश्यकता होती है

शरीर के सभी कार्यों को ठीक से करने के लिए पर्याप्त मात्रा में तांबे की आवश्यकता होती है। 9 से 13 वर्ष की आयु के बच्चों को प्रतिदिन 700 माइक्रोग्राम तांबे की आवश्यकता होती है, जबकि 14 से 18 वर्ष की आयु के किशोरों को 890 माइक्रोग्राम तथा वयस्कों को 900 माइक्रोग्राम तांबे की आवश्यकता होती है। हालाँकि, गर्भवती महिलाओं को प्रतिदिन 1,000 माइक्रोग्राम तांबे की आवश्यकता होती है, जबकि स्तनपान कराने वाली महिलाओं को 1,300 माइक्रोग्राम तांबे की आवश्यकता होती है।

इनमें तांबा प्रचुर मात्रा में पाया जाता हैः डार्क चॉकलेट, आलू, काजू, सूरजमुखी के बीज, टोफू, छोले, साबुत अनाज, एवोकाडो, अंजीर।

पानी सबसे आसान और सस्ता तरीका है।

हमारा शरीर तांबे को सीधे तौर पर पचा नहीं सकता। सेवन का एकमात्र स्रोत आहार है। जब भोजन के माध्यम से इस आवश्यकता को पूरा करने की बात आती है, तो विकल्प सीमित होते हैं। इसलिए तांबे को मिलाने का सबसे आसान तरीका है इसे पानी के माध्यम से मिलाना।

आप रात भर तांबे के जग, बर्तन या बोतल में पानी रख सकते हैं और सुबह खाली पेट 1-2 गिलास पी सकते हैं। इससे अधिक पानी न पिएं और इसे ठंडा करने के लिए फ्रिज में न रखें। आपको यह पानी लगातार दो से तीन महीने तक रोजाना पीना होगा और फिर कुछ महीनों का ब्रेक लेकर दोबारा शुरू करना होगा। आयुर्वेद के अनुसार इस पानी को पीने के कई फायदे हैंः

शरीर के तीनों दोषों अर्थात कफ, वात और पित्त को संतुलित करता है। अंगों के समुचित कार्य में मदद करता है

पोषक तत्वों को पचाने में मदद करता है

चयापचय प्रक्रिया को बढ़ाता है

आपके शरीर को शुद्ध करता है

शरीर को विषमुक्त करने में मदद करता है।

इसे पूरक के रूप में न लें।

अधिकांश लोगों को तांबे की आवश्यकता भोजन या पानी से पूरी हो जाती है, लेकिन यदि इसे पूरक के रूप में लिया जाए तो इसकी अधिक मात्रा का खतरा रहता है। इससे पेट दर्द, दस्त, यकृत रोग, मतली और उल्टी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। अपने डॉक्टर

संबंधों की संवेदना

इन दिनों सोशल मीडिया पर संबंधों पर खूब बातें होती हैं। उसे बनाने, चलाने और बढ़ाने पर चर्चा, बहस मुबाहिसा आदि चलते ही रहते हैं। सुबह से लेकर देर रात तक बड़ी-बड़ी सारगर्भित उक्तियां लिखी, कही और कहीं से उठा के कहीं लगा ली जाती है। बहुत सारे लोग सुबह, दोपहर, शाम तीनों वक्त अपने मित्रों और इष्टजनों को शुभवचन, मंगलकानाएं आदि भेजते रहते हैं। किसी को याद करना, उनके हर दिन को स्मरणीय बनाने की कोशिश करना एक अच्छी बात है । पर अफसोस की बात यह होती है कि ऐसी बातें ज्यादातर इन्हीं खानों तक सीमित रह जाती हैं। महत्त्वपूर्ण यह भी कि इन्हें कहने और सुनने वाले अधिकांश लोगों का लगभग सारा समय उनके हाथों की परिधि में समाए 'डिजिटल स्लेटों' की गुत्थियों को सुलझाने - उलझाने में ही बीत जाती है। संबंधों की दुहाई देते ये लोग दूर के रिश्तेदारों की कौन कहे, अपने परिजनों, यहां तक कि माता - पिता के साथ भी सही तरीके से रिश्तों का निर्वहन नहीं कर पाते। संबंधों के निर्माण और निबाह की अधिकांश बातें इंस्टाग्राम, वाट्सएप और फेसबुक आदि से शुरू होकर वहीं खत्म भी हो जाती हैं।

संबंध ही हमारे जीवन और सामाजिक जीवन का आधार है । उसका विकास और विस्तार समाज के निर्माण की बुनियाद है। महान राजनीतिक विचारक अरस्तू कहते हैं, 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी । समाज से बाहर रहने वाला या तो पशु है या देवता ।' मनुष्य अलग-थलग नहीं रह सकता । समाज में ही उसका विकास होता है। गौरतलब है कि समाज के निर्माण का आधार लोगों के बीच का परस्पर संबंध है। आपसी संबंध और समाज एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। एक के बिना दूसरा अस्तित्वहीन है। हमारे जीवन का आधार संबंध है और इसी से हमारे कर्म भी निर्धारित होते हैं। यानी संबंधों का ताना-बाना ही मनुष्य को कुछ करने या कुछ बनने के लिए उत्प्रेरित करता है। हम अपनी जरूरतों की पूर्ति और घर- परिवार, गांव, देश और समाज के लिए अपनी उपादेयता सिद्ध करने के लिए कर्म से जुड़ते हैं ।

कहा जा सकता है कि जीवन संबंध है और संबंध ही कर्म । संबंध का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। मनुष्य का संबंध सिर्फ मनुष्य से ही नहीं होता, बल्कि स्वयं से, विचारों, वातावरण, प्रकृति, जीव-जंतु आदि से जुड़ना भी संबंध ही है। इन सबके साथ अपने रिश्तों को समझ कर ही व्यक्ति जीवन को भली-भांति समझ सकता है। उसके व्यक्तित्व का विस्तार तथा जीवन की पूर्णता का रहस्य इसी में समाहित है । यह एक अजीब बात है कि हममें से दुनिया के ज्यादातर हिस्से से नाता जोड़ते और सामंजस्य स्थापित करते-करते स्वयं की क्षमताओं, मन की गति, सोच आदि से ही अनभिज्ञ होते जाते हैं। उनकी सारी उम्र इसी अनभिज्ञता में बीत जाती है। वास्तव में जीवन के सहज और संतोषप्रद प्रवाह के लिए आत्म साक्षात्कार सबसे पहली जरूरत है । स्वयं को जानना, मन की गति को समझना, उससे जुड़ना और उसी दिशा में कर्मरत होना मनुष्य और समाज के बेहतर संबंधों के लिए जरूरी है। जो व्यक्ति स्वयं को नहीं पहचानता, अपनी जरूरतों, खुशियों के लिए पहल नहीं करता या उसे महत्त्व नहीं देता, वह समाज से भी सकारात्मक जुड़ाव स्थापित नहीं कर पाता ।

बिना संबंध के मनुष्य या किसी भी जीव मात्र का होना असंभव है। हमारे होने का मतलब ही संबंधित होना है। सूर्य, चांद, धरा, पर्वत, नदी, वृक्ष, जल, थल, नभ, जीव सहित प्रकृति का हर जर्रा एक दूजे के साथ स्थापित संबंधों पर ही टिके हैं। सच यह है कि सृष्टि का चक्र इसी के बदौलत चलायमान है। हमारे द्वारा संबंधों की इन गुत्थियों को समझ नहीं पाना संघर्ष और विवाद का कारण बनता । बहुत 'सारे लोग संबंधों को जीते नहीं है, बल्कि आवश्यकतानुसार उसका उपयोग करते हैं। जन्म से मिले संबंधों के अलावा (अक्सर उसमें भी) अधिकांश में उसकी लाभप्रदता और महत्त्व की तलाश करते हैं। व्यक्ति की स्वार्थपरकता उसे ऐसा करने को विवश करती है। अपने वृद्ध माता-पिता और परिजनों को वृद्धाश्रम में रखना, संपत्ति के लिए परिवारजनों, मित्रों से विश्वासघात, छोटी-छोटी बातों को लेकर रिश्ते तोड़ना, अपने फायदे के लिए किसी भी हद तक जाना आदि स्वार्थपरकता की पराकाष्ठा है।

गौरतलब है कि स्वार्थपरता और संबंध एक दूसरे के धुर विरोधी हैं। दोनों का साथ चलना असंभव है। अगर हम मानव जीवन की गहन पड़ताल करें तो पाएंगे कि वह अलग-अलग समय में अलगाव की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरता है । वह ज्यादातर उन्हीं संबंधों को तरजीह देता है, जिनसे उसका हित जुड़ा होता है और हितों की समाप्ति के साथ ही उनसे छुटकारा पा लेता है या पाने की कोशिश करता है। यह स्थिति संबंध के मर्म पर आघात है । वास्तव में संबंधों को समझना जीवन को समझने के समान है । यह मनुष्यता का द्योतक है। जिसने भी इसकी गूढ़ता और महत्त्व को समझा है, वही सफल इंसान बन पाया है। विडंबना यह है कि आज के समाज में सफलता की जो परिभाषा तय की गई है, उसका अंधानुकरण किया जा रहा है, उसे प्राप्त करने के क्रम में संबंधों को दरकिनार कर दिया जाता है। सवाल है कि अगर हम सफलता की ऊंचाई पर पहुंच जाते हैं, लेकिन उस सफलता पर उल्लसित होने वाला हमारा कोई करीबी या संबंधी हमारे आसपास नहीं होता, तो उसकी क्या कीमत होगी ।

-विजय गर्ग

(लाभार्थी कौन ?) आरक्षण: पीढ़ीगत विशेषाधिकार या वास्तविक न्याय ?

आरक्षण भारतीय समाज में सदियों से व्याप्त असमानताओं को समाप्त करने और वंचित समुदायों को मुख्यधारा में लाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। लेकिन समय के साथ यह एक पीढ़ीगत विशेषाधिकार बनता जा रहा है, जिससे वास्तविक जरूरतमंद वंचित रह जाते हैं। आर्थिक आधार और समय-समय पर समीक्षा की अनिवार्यता इस व्यवस्था को और अधिक न्यायसंगत बना सकती है। यदि हम एक सशक्त और समतामूलक समाज का निर्माण करना चाहते हैं, तो आरक्षण नीति में सुधार और पुनर्गठन की दिशा में गंभीर प्रयास करने होंगे।

- डॉ सत्यवान सौरभ

भारत में आरक्षण का मुद्दा हमेशा से एक संवेदनशील और विवादास्पद विषय रहा है। यह सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और ऐतिहासिक उत्पीड़न के निवारण का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया, आरक्षण की अवधारणा अपने मूल उद्देश्यों से भटकती प्रतीत होती है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस बी.आर. गवई का बयान इस बहस को एक नई दिशा में ले जाता है, जिसमें उन्होंने कहा कि संपन्न लोगों को आरक्षण से बाहर करने का निर्णय संसद को करना चाहिए। उनका यह कथन कई सवाल खड़े करता है – क्या आरक्षण का वास्तविक लाभ उस वर्ग तक पहुंच रहा है जिसके लिए यह बनाया गया था? क्या यह व्यवस्था अब सुधार और पुनर्विचार की मांग करती है?

आरक्षण का मूल उद्देश्य

आरक्षण का आरंभ भारतीय समाज में व्याप्त गहरी सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने और सदियों से वंचित समुदायों को मुख्यधारा में लाने के उद्देश्य से हुआ था। यह एक ऐसा साधन था जिससे सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर कर समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिल सके। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर ने आरक्षण को एक अस्थायी उपाय के रूप में प्रस्तुत किया था, ताकि दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों को न्याय और अवसर मिल सके। उनका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जहाँ जातीय भेदभाव और सामाजिक उत्पीड़न का कोई स्थान न हो। यह केवल सरकारी नौकरियों और शिक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि एक समग्र सामाजिक सुधार की दिशा में एक साहसिक कदम था।

समस्या का असली चेहरा

लेकिन, धीरे-धीरे यह व्यवस्था उन परिवारों के लिए एक पीढ़ीगत विशेषाधिकार बनती जा रही है जो पहले ही सशक्त हो चुके हैं। न्यायमूर्ति गवई का यह कहना कि जब एक व्यक्ति IAS या IPS बन जाता है, तो उसके बच्चे उसी समाज की कठिनाइयों का सामना नहीं करते हैं, एक महत्वपूर्ण सत्य की ओर इशारा करता है। एक अधिकारी का परिवार उच्च शिक्षा, बेहतर जीवनशैली और संसाधनों तक सहज पहुंच के कारण वास्तविक वंचितों से कोसों दूर हो जाता है। यह स्थिति केवल सरकारी सेवाओं में ही नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र, उच्च शिक्षा संस्थानों और अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में भी देखी जा सकती है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या इन परिवारों को लगातार आरक्षण का लाभ मिलना न्यायसंगत है?

आर्थिक आधार की अनिवार्यता

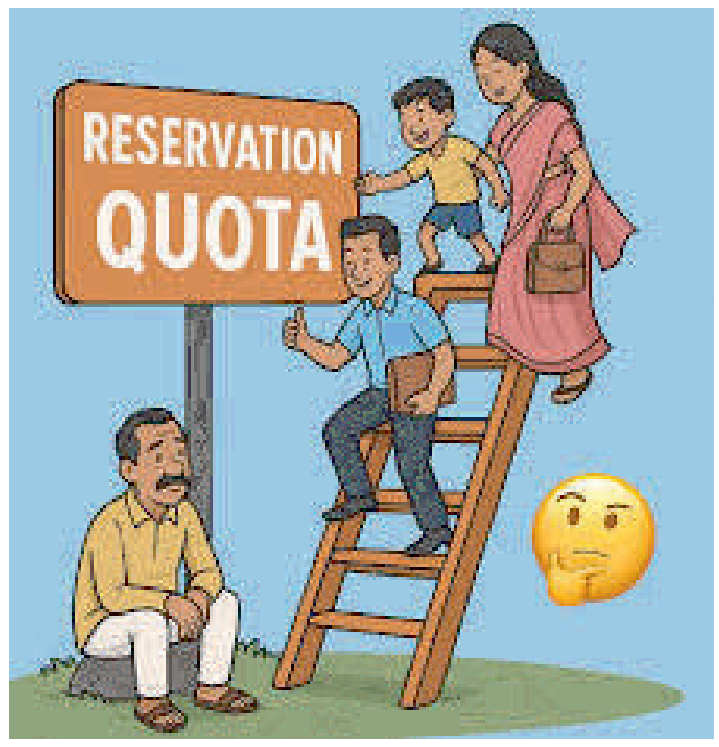

आरक्षण का प्रमुख उद्देश्य केवल जातीय भेदभाव को समाप्त करना ही नहीं था, बल्कि आर्थिक असमानता को भी दूर करना था। परंतु आज आरक्षण का आधार अधिकतर जातीय पहचान पर आधारित है, जबकि वास्तविकता में आर्थिक स्थिति भी एक महत्वपूर्ण कारक होनी चाहिए। संपन्न वर्गों को आरक्षण से बाहर करने की बात करना इस दिशा में एक आवश्यक कदम हो सकता है, ताकि वास्तव में जरूरतमंद लोगों तक इसका लाभ पहुंच सके। यह दृष्टिकोण न केवल संसाधनों का अधिक न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करेगा, बल्कि समाज में वास्तविक समता और न्याय की भावना को भी बढ़ावा देगा।

आरक्षण की सामाजिक चुनौतियाँ

आरक्षण की व्यवस्था कई बार राजनीतिक लाभ और वोट बैंक की राजनीति का शिकार हो जाती है। इससे वास्तविक जरूरतमंद तबके पीछे छूट जाते हैं। इसके अतिरिक्त, आरक्षित वर्गों में भी एक प्रकार का वर्ग विभाजन उभरने लगा है, जहाँ कुछ परिवार लगातार इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं, जबकि अन्य अब भी हाशिये पर हैं। यह प्रवृत्ति न केवल आरक्षण के मूल उद्देश्य को कमजोर करती है, बल्कि सामाजिक तनाव और अन्याय की भावना को भी बढ़ाती है।

संसद की जिम्मेदारी

अब समय आ गया है कि संसद इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करे। यह तय करना होगा कि क्या आरक्षण का लाभ उन परिवारों तक सीमित रहना चाहिए जो वास्तविक रूप से वंचित और पिछड़े हैं। यह बदलाव सामाजिक न्याय की उस मूल भावना के अनुकूल होगा जिसके लिए आरक्षण की व्यवस्था बनाई गई थी। यह निर्णय केवल कानूनी नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। साथ ही, यह एक ऐसी प्रणाली की मांग करता है जो समय-समय पर आरक्षण की प्रासंगिकता की समीक्षा कर सके।

समाधान की दिशा

आरक्षण का लाभ केवल एक पीढ़ी तक सीमित किया जाए।

आर्थिक आधार को शामिल कर जातिगत और आर्थिक पिछड़ेपन का समुचित आकलन किया जाए। संपन्न परिवारों के बच्चों को आरक्षण से बाहर रखा जाए, ताकि वास्तविक जरूरतमंदों तक इसका लाभ पहुंचे। आरक्षण की समीक्षा एक निश्चित अवधि पर की जाए ताकि इसके वास्तविक लाभार्थियों की पहचान हो सके। शिक्षा और रोजगार में समावेशी नीतियों को बढ़ावा दिया जाए ताकि सभी वर्गों को समान अवसर मिल सके। आरक्षण की प्रभावशीलता पर समय-समय पर पारदर्शी शोध और सर्वेक्षण किए जाएँ ताकि इसके वास्तविक लाभार्थियों की स्थिति का आकलन हो सके। क्षेत्रीय और ग्रामीण स्तर पर शिक्षा और कौशल विकास में सुधार लाया जाए ताकि वंचित वर्गों की वास्तविक क्षमता को निखारा जा सके। राजनीतिक दखलंदाजी को सीमित कर आरक्षण नीति को एक दीर्घकालिक और निष्पक्ष दृष्टिकोण से देखा जाए।

नया सवेरा

आरक्षण एक संवेदनशील और जटिल विषय है, लेकिन समय के साथ इसके ढांचे में बदलाव की आवश्यकता है। जस्टिस गवई का बयान एक महत्वपूर्ण बहस की ओर इशारा करता है जो हमारे समाज की प्रगति और न्याय की नई परिभाषा को आकार दे सकता है। यदि हम वास्तव में एक समतामूलक समाज का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें आरक्षण की नीति को समय के साथ सुधारना और पुनर्गठित करना होगा। यह न केवल संविधान के मूल उद्देश्यों का सम्मान होगा, बल्कि एक बेहतर और अधिक न्यायपूर्ण समाज की दिशा में एक आवश्यक कदम भी।

दिल सुन ले स्पंदन... !

आज फिर तड़प उठा तेरे लिए मन,
धड़क रहा मेरा दिल सुन ले स्पंदन।
मैं अमरबेल बन लिपट जाऊ तुमसे,
सुध-बुध भूल रहीं होश हुए गुम से।
अनजाने में तुमसे जोड़ लिया बंधन,
मैं समझ गईं आखिर तुम मेरे नंदन।
आज फिर तड़प उठा तेरे लिए मन,
धड़क रहा मेरा दिल सुन ले स्पंदन।
अब तो मेरी एक यहीं हैं अभिलाषा,
ये प्यार स्वीकार कर जगाओ आशा।
मैंने माना मुझसे बहुत ही दूर हो तुम,
अब मुझपे सम्मोहन कर हो गए गुम।

संजय एम तराणेकर

(कवि, लेखक व समीक्षक)

प्रियंका सौरभ की कविताएँ

नींद और जागृति

नींद तो हर रोज़ खुलती है,
पर क्या खुलती हैं आँखें सच में?
मन के अंधेरों में कहीं छुपी,
एक उम्मीद सी कब जागे।

जीवन सिर्फ साँसों का खेल नहीं,
यह तो एक गीत है, एक पीड़ा,
जब आँखें खुलती हैं तो देखती हैं,
कैसे टूटती हैं सपनों की दीवारें।

नींद से बढ़कर है जागरण का सुख,
जब मन में खिले नए फूल,
हर दर्द को गले लगाकर,
खुशबू दे नई राहों को।

आओ, जागें उस पल के लिए,
जब आँखें खुलें, जीवन जागृत हो,
सपनों से कहीं आगे बढ़कर,
सच की रौशनी में नहाया हो।

अनकही तकलीफें

तकलीफें, जो दिखती नहीं,
मगर भीतर चुभती रहती हैं।
कह न सके जो दिल की भाषा,
वो लहरें मद्धम-सी बहती हैं।

आँखों में छुपा हुआ समंदर,
जो कभी बह निकले न सके।
मौन से बुनी हुई एक कथा,
कोई सुन सके, कोई न सके।

मुस्कान के पर्दे के पीछे,
छुपा एक अकेला साया है।
जिसके दर्द को समझ न सका,
वो दिल का कोई माया है।

धूप में भी ठंडी छाँव सी,
कहीं ये पीड़ा छुपी रहती है।
अधरों पर अनकहे गीत,
मन की कोई पुकार सुनती है।

चुप्पी का सन्नाटा

कभी बैठ अकेले,
धुंधले चांद की परछाईं में,
सांसों की लय पर सुनना,
वक़्त की खामोश धुन,
जहां हर सफ़ेद लहर,
मौसम की थकी आह है।

वो जो नयनों के कोनों में,
सफ़ेद हो चली है आस,
वो उम्र नहीं,
बस सहमी हुई मुस्कान है,
किसी छूटे हुए स्वप्न की,
कोमल सी अनुगूंज।

तुम्हें जो बालों की सफेदी दिखी,
वो अनकही कहानियों का बोझ है,
आंधियों में जलते दीप का हठ है,
जिसने हर रात उजाले की गुहार की।

कभी देखना,
रजतरेखा की झिलमिलाहट,
हर श्वेत रेशा,
निस्वार्थ तप का अमिट स्मारक है,
जो न बूढ़ा हुआ, न झुका,
बस और अधिक उजला हुआ।

बूढ़ा हुआ संसार?

**रजत के धागों से बुनी
समय की श्वेत चादर,
प्रशांत नभ की मौन गाथा,
अतीत की बिखरी मुस्कान।

सांसों की तूलिका से,
अमिट रेखाएं खींचता समय,
पलकों पर ठहरा एक सपना,
बूढ़ा नहीं होता, बस गहरा होता है।

आंखों के कोर से फिसली,
एक बूंद की कथा,
धुंधला नहीं करता दर्पण,
बस गहराई नापता है।

तुम जो आहटों में बसी हो,
श्वास की शीतल पुकार,
तुम्हारी मुस्कान से पूछो,
किस पल में बूढ़ा हुआ संसार?**

अनकही परछाइयाँ

वो जो साड़ी के किनारे में,
सिहरती हैं चुप्पी की नर्म लहरें,
वो जो पायलों में खनकती हैं,
अधूरे स्वप्नों की डरी हुई दस्तकें,
उन्हें भी शायद प्रेम कहते हैं।

कभी जो झुकी थी आँखें,
किसी अनमोल पलों की चुप सहमी कसम,
हथेलियों में बंधी,
तब प्रेम ने फुसफुसाया था –
ꞩतुम्हारा होना ही मेरा होना है।ꞩ

वो जो झुक जाता है,
हर बार तुम्हारे साड़ी के कोर से,
वो सिर्फ़ घुटने नहीं मोड़ता,
बल्कि आत्मा की गहराइयों में,
मौन की कोई अनगिनत सीढ़ियाँ उतरता है।

जब तुम आंचल सहेजती हो,
वो अपने सपनों की सलवटें संभालता है,
तुम्हारी मुस्कान की चौखट पर,
वो अपनी दुनिया की हर चिंता रख आता है।

शायद प्रेम यही है –
न घुटनों की मोहर, न शब्दों का आभूषण,
बस एक चुप्पी का विस्तार,
जो हर साड़ी की तह में छुपा है,
और हर 500 की शर्ट में संवरता है।

समर्पण की सादगी

500 की शर्ट में, संजीदा मुस्कान,
5000 की साड़ी से बुनता सम्मान।
हाथों में उसके, बिन शब्दों की बातें,
हर तह में छुपा, प्रेम का अटूट मान।

सादगी की छांव में, अपनेपन का गीत,
झुकता है जो घुटनों पर, वो नहीं कभी कमज़ोर,
चाहत की हर सलवट, वो सहेजता है चुपचाप,
सचमुच, वो प्रेम का सबसे सजीव शोर।

तुम्हारे आँचल के मोड़ में, उसकी दुनिया बसती,
तुम्हारी मुस्कान में, उसका पूरा जहान हंसता।
कभी देखा है, आँखों की उस नमी को,
जो तुमसे पहले, तुम्हारे हर दर्द को समझता?

रिश्ते वो नहीं जो सिर्फ धन से तौले जाएं,
ये तो वो इश्क़ है, जो हर आहट पे हाथ थाम ले।
500 हो या 5000, कीमत नहीं इज़्ज़त की है,
जो तुम्हारे सम्मान में हर कदम साथ चले।

आंसुओं का गीत

जब हर दर्द से टकराकर,
मन की दीवारें दरकने लगें,
और उम्मीदों की चादर,
चुपचाप सरकने लगे।

जब हँसी की परतें,
ग़म के नीचे दब जाएं,
और खामोशी की गहराई में,
राहें तकती परछाई हो जाएं।

तब वही हाथ,
जो कभी कांपे थे थकान से,
एक-एक बूंद को समेटकर,
नए सपनों की मिट्टी बन जाते हैं।

आंसुओं की नमी से,
मजबूती की जड़ें उगाते हैं,
और फिर उभरते हैं
जैसे तपते सूरज की गर्माहट,
हर ठंडे अहसास को पिघलाती है।

क्योंकि गिरने का साहस,
और खुद को उठाने का हौसला,
सिर्फ उसी के हिस्से आता है,
जिसने खुद अपने हाथों से
अपने आंसू पोंछे हों।

परछाइयां

भूत की परछाइयों से कब तक यूं घबराओगे,
आने वाले सवेरे को कैसे फिर अपनाओगे।
छोड़ दो बीते पलों का बोझ मन की गठरी से,
वरना नए सपनों का आंगन कभी ना सजाओगे।

यादों की परतों में जो ठहर गए हैं पल,
उनमें बिखरी मुस्कानों से अब बाहर निकल।
हर आहट में नई उम्मीद की दस्तक है,
क्यों पुराने दरवाज़ों पर खामोश खड़े नतमस्तक है?

राहें बदलती हैं, मौसम भी साथ छोड़ते हैं,
दर्द के साये में कब तक यूं अकेले रोते हैं?
तुम्हारी हिम्मत की मशाल बुझी नहीं अब तक,
फिर क्यों अंधेरों से घबराकर कदमों को तोड़ते हैं?

आओ, मिटा दें वो लकीरें जो अतीत ने खींची थीं,
सपनों की तख्ती पर नई इबारतें लिखी थीं।
गुज़रे वक्त की राख से एक दीया तो जलाओ,
नए सवेरे की आगोश में खुद को फिर पाओ।

छोड़ दो शिकवे, छोड़ दो पुराने बहाने,
आंखों में बसा लो वो ख्वाब जो कल नहीं माने।
जीवन की ये बेमोल घड़ियां यूं ना गंवाओ,
आने वाले कल की बाहों में खुद को फिर समाओ।

तोड़ दो जंजीरें जो मन की गहराइयों में जकड़ी हैं,
वो आवाज़ें सुनो जो आसमान से उभरती हैं।
भूत की परछाइयों से बाहर आओ अब,
देखो, तुम्हारे हिस्से की सुबह अब खिलती है।

मौन की पंखुड़ियाँ

मैंने देखा है,
उन पत्तों को,
जो आंधी में कांपते हैं,
जिनकी जड़ें मिट्टी में हैं,
पर मन खुली हवा का सपना देखता है।

मैंने सुना है,
उस चिड़िया की पुकार,
जो अपने घोंसले से दूर,
किसी और के आंगन में
अपना बसेरा ढूंढती है।

मैंने महसूस किया है,
उन लहरों की बेचैनी,
जो सागर के सीने से उठती हैं,
पर किनारे की कैद में तड़पती हैं।

मेरे मन का हर कोना,
बस इन्हीं बंधनों में उलझा,
पिंजरों से टकराता,
खुद को आज़ाद करने की चाह में,
हर रोज़ एक नई मौत मरता है।

कैसे कह दूँ,
कि मैं एकलौती नहीं?
हर बेटी, हर बहन, हर माँ,
इस दोहरी सोच की बेड़ियों में जकड़ी है,
जो प्रेम से पहले, संपत्ति से तौली जाती है।

कभी देखा है,
उस गुलाब की पंखुड़ी को,
जो कांटों के बीच खड़ी,
अपनी महक में खोई रहती है,
पर किसी की चाहत का भार
अपने नाजुक कंधों पर लिए जीती है।

मैं भी तो वही हूँ,
एक नाजुक सपना,
जिसे रिश्तों की रेशमी डोर में,
सोने-चाँदी के बंधनों में जकड़ दिया गया।

पर अब,
मुझे खुद की महक से मिलना है,
इस दोहरी सोच से परे,
अपनी पहचान को पाना है।
अब मुझे उगना है,
उन पत्तों की तरह,
जो आंधियों से लड़ते हैं,
उन लहरों की तरह,
जो चट्टानों से टकराती हैं,
उन पंखुड़ियों की तरह,
जो कांटों के बीच भी मुस्कुराती हैं।

दिल से जुड़े।

टेक्नोलॉजी का यह दौर,
जहाँ रिश्ते सिमटते जा रहे हैं,
जहाँ उंगलियों की सरसराहट में
ममता की गर्माहट खो रही है,
जहाँ नज़रों की मुलाकात,
अब स्क्रीन की रोशनी में घुल रही है।

वो छोटे-छोटे पलों का जादू,
जो कभी एक मुस्कान से झलकता था,
अब किसी नोटिफिकेशन की आहट में,
खो जाता है।
बच्चों की हंसी,
जो कभी आँगन की मिट्टी से महकती थी,
अब गेमिंग की आभासी दुनिया में,
गुम हो गई है।

रिश्ते जो कभी एक पत्ते की सरसराहट,
या एक छोटे से स्पर्श में बंध जाते थे,
अब डिवाइस की बैटरी से जुड़ गए हैं।
माँ की थपकी, पापा की पुकार,
भाई-बहन का हँसी-ठिठोली,
सब जैसे स्क्रीन के उस पार,
अजनबी बनते जा रहे हैं।

पर क्या रिश्तों की ये गूंज,
कभी वाइब्रेशन की हलचल से,
महसूस की जा सकती है?
क्या वो आँखों की नमी,
कभी 'रिच एमोजी' से बयां हो सकती है?

समय है, फिर से लौटने का,
उन मासूम पलों की ओर,
जहाँ रिश्ते दिल से जुड़ते थे,
न कि किसी नेटवर्क से।
जहाँ हंसी की गूंज,
मोहल्ले की गलियों में गूंजती थी,
न कि किसी हेडफोन में सिमट जाती थी।

रिश्तों की गूंज को जिंदा रखना है,
तो वक़्त है कि हम अपनों के पास,
बिना किसी नेटवर्क की बाधा के,
दिल से जुड़े।

रिश्तों की गूंज

रिश्ते – वो मौन स्पंदन,
जो न फासलों से बंधते हैं,
न ही समय की सीमाओं से,
ये तो दिल की उस गहराई में बसते हैं,
जहाँ हर एहसास की जड़ें गहरी होती हैं।

माँ की ममता – जो कभी लोरी बनकर,
तो कभी थपकी बनकर,
हमारे सपनों को संजोती है।
पिता का वो मौन संघर्ष,
जो हर जिम्मेदारी को मुस्कान से ढक देता है।

भाई – जो कभी हँसी-ठिठोली में छुपा,
तो कभी अनकही फ़िक्र में बसा रहता है।
बहन – जो कभी झगड़े में,
तो कभी आँखों में छलकते आंसुओं में,
अपना स्नेह उकेरती है।

ये रिश्ते समय से परे हैं,
इनका मूल्य वक़्त आने पर ही समझ आता है,
जैसे ठंडी छांव का महत्व
तब महसूस होता है,
जब जीवन की धूप तपाने लगे।

क्योंकि,
दिल से जुड़े रिश्ते कभी नहीं टूटते,
वे तो बस समय के साथ और गहरे,
और अमर हो जाते हैं।

दौर ए धोखा

ऐसे दौर में हैं, जहां
मुस्कानें भी मुखौटे हो गईं,
चुप्पियाँ भी साजिशें बुनने लगीं,
जहां दोस्ती का रंग अब,
पल भर में ज़हर हो जाए।

कौन अपना, कौन पराया,
किस पर ऐतबार करें,
यहाँ हर हँसी के पीछे,
एक ख़ंजर छुपा बैठा है।

राहें तो वही हैं, मगर,
अब कदमों की आहटें बदल गईं,
साये भी साथ छोड़ने लगे,
और रिश्ते बस नाम के रह गए।

यहाँ आँखों में आँसू नहीं,
बस इरादों का तेज़ाब है,
सामने बैठा शख़्स,
दोस्त है कि सांप,
कह पाना मुश्किल है।

---प्रियंका सौरभ

भारतीय शादी: रिश्तेदारों का तड़कता-भड़कता रियलिटी शो

भारतीय शादी महज एक समारोह नहीं, बल्कि एक जीवंत, रंग-बिरंगा रियलिटी शो है, जिसमें ड्रामा, कॉमेडी, और सस्पेंस की कोई कमी नहीं। दूल्हा-दुल्हन भले ही मंच के केंद्र में हों, लेकिन असली सितारे तो हमारे रिश्तेदार हैं। ये वो अनोखे किरदार हैं, जो बिन बुलाए समीक्षक, बिना डिग्री के जासूस, और बिना माइक के धमाकेदार कमेंटेटर बनकर हर पल में जान डाल देते हैं। इनके पास हर मौके पर तीखी टिप्पणी का अनलिमिटेड लाइसेंस और हर छोटी-बड़ी बात को तूल देने का हुनर होता है।

जैसे ही शादी का कार्ड हाथ में आता है, रिश्तेदारों का छिपा हुआ जीपीएस सिस्टम तुरंत एक्टिवेट हो जाता है, जो गूगल मैप को भी मात दे देता है। अरे, ये वही मैरियट होटल तो नहीं, जहाँ सक्सेना जी की बेटी की शादी में पंडाल का तंबू टपक रहा था? ये कोई सवाल नहीं, बल्कि एक जासूसी मिशन का शंखनाद है! ये लोग जगह की भौगोलिक स्थिति कम, सामाजिक स्टेटस की गहराई ज्यादा नापते हैं। ये शादी के वेन्यू को ऐसे स्कैन करते हैं, जैसे नासा चाँद पर खजाना ढूंढ रहा हो। इनके लिए शादी की लोकेशन सिर्फ एक जगह नहीं, बल्कि सामाजिक रुतबे का चमकता बैरोमीटर है, जो हर छोटी बात को स्टेटस की कसौटी पर कसता है।

रिश्तेदारों की नजरें किसी अल्ट्रा-एचडी सीसीटीवी कैमरे से कम नहीं - हर डिटेल पर इनका लेंस फोकस्ड रहता है। जैसे ही दुल्हन स्टेज पर कदम रखती है, इनका 'हाई-ज़ूम मोड' तुरंत ऑन हो जाता है। लहंगे का बॉर्डर असली जरी का है या सस्ता गोटा? जरा करीब से तो देखें। ये लहंगा तो ऑनलाइन लिया होगा, बिलकुल बारीक काम नहीं। दूल्हे की

शेरवानी भी इनके तीक्ष्ण रडार से नहीं बचती। अरे, वो कॉलर की कढ़ाई देखो, मशीन की है, हैंडमेड तो बिलकुल नहीं। ये लोग मेहमानों की भीड़ में भी हर चेहरे को स्कैन करने में माहिर हैं। इनके लिए शादी का हर कोना एक रहस्यमयी क्राइम सीन है, और ये खुद को शेरलॉक होम्स से कम नहीं मानते।

रिश्तेदारों की गपशप फैक्ट्री किसी 24x7 न्यूज़ चैनल से कम नहीं - हर पल एक नई ब्रेकिंग न्यूज़ तैयार। सुना है, पंडित जी ने मंत्र में चूक कर दी। ये लोग व्हाट्सएप ग्रुप्स और फेसबुक स्टोरीज में ऐसी गॉसिप की सुनामी लाते हैं कि बड़े-बड़े न्यूज़ नेटवर्क भी हैरान रह जाएं। अगर किसी ने रिसेप्शन की तस्वीरें सोशल मीडिया पर न डालीं, तो तुरंत कानाफूसी शुरू - कुछ तो गड़बड़ है, भाई। गिफ्ट्स खोलने का वक्त आते ही इनका लाइव स्टूडियो ऑन हो जाता है - वो लाल लिफाफा देखा? सिर्फ 251 रुपये। हर शादी इनके लिए किसी धमाकेदार वेब सीरीज का नया एपिसोड है, जहाँ टीआरपी की भूख कभी शांत नहीं होती।

अगर आप शादी में सिंगल हैं, तो रिश्तेदारों का "अब तेरी बारी" दस्ता तुरंत आपके पीछे पड़ जाता है, मानो आप कोई हाई-प्रोफाइल मिशन हो। इनका बायोडाटा स्कैनिंग सिस्टम किसी डेटिंग ऐप से कहीं ज्यादा तेज और तीखा है। बेटा, अब तो उम्र निकल रही है, कोई पसंद है या हम रिश्ता ढूंढें? अगर लड़की ने साड़ी पहनी, तो तुरंत कमेंट्री शुरू - वाह, बिल्कुल दुल्हन जैसी लग रही हो। कब ला रही हो दूल्हा घर? और अगर लड़के ने सूट पहना, तो - इतना डैशिंग लुक, अब तो शादी पक्की कर लो। ये लोग कुंवारों को ऐसे घेरते हैं, जैसे सीबीआई किसी मोस्ट-वॉन्टेड को ट्रैक कर रही हो। इनके लिए सिंगल होना कोई लाइफ चॉइस नहीं, बल्कि एक सामाजिक रहस्य है, जिसे ये हर कीमत पर सुलझाने को बेताब रहते हैं।

जैसे ही शादी में खाने की टेबल सजती है, रिश्तेदारों की जीभ तुरंत पांच सितारा फूड क्रिटिक में बदल जाती है। अरे, मलाई कोफ्ते में तो क्रीम का जायका ही गायब है, बस ग्रेवी बनाकर छोड़ दिया। या फिर, ये छोले भटूरे में मसाला कम है, लगता है जल्दबाजी में बनाया है। मिठाई पर इनका फैसला तो किसी शाही फरमान से कम नहीं - ये रसगुल्ले तो डिब्बाबंद हैं, ताजगी का नामोनिशान नहीं। ये लोग थाली को ऐसे खंगालते हैं, जैसे फूड इंस्पेक्टर टेस्टिंग लैब में सैंपल चेक कर रहा हो। और अगर बुफे की लाइन थोड़ी भी लंबी हुई, तो शिकायतों का सिलसिला - इतना इंतजार...? इनके लिए खाना महज भोजन नहीं, बल्कि शादी की इज्जत और रुतबे का चमकदार पैमाना है, जिसे ये हर कौर के साथ नापते हैं, और हर कमी को सालों तक गपशप का तड़कता-भड़कता मसाला बना देते हैं।

रिश्तेदारों का गिफ्ट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (जीआईबी) किसी सीबीआई से कम नहीं—डब्बे का वजन नापकर ही ये लोग गिफ्ट की कीमत का हिसाब लगा लेते हैं! अरे, ये तो सस्ता क्रॉकरी सेट है। लिफाफे की मोटाई पर इनकी नजरें तो ऐसी चमकती हैं, जैसे कोई हाईटेक एक्स-रे स्कैनर। विदाई के वक्त जब गिफ्ट रजिस्टर बनता है, तो ये लोग पूरी क्राइम सीन इन्वेस्टिगेशन (सीएसआई) यूनिट बनकर तैनात हो जाते हैं। चाची ने तो बस एक ओवन थमा दिया इनके लिए गिफ्ट महज तोहफा नहीं, बल्कि रिश्ते की गहराई और स्टेटस का लिटमस टेस्ट है।

भारतीय शादी कोई साधारण आयोजन नहीं, बल्कि एक चमकदार रियलिटी शो है, जहाँ दूल्हा-दुल्हन तो बस मंच सजाने का बहाना हैं, असली तड़का तो रिश्तेदार लगाते हैं। इनके बिना शादी वैसी ही फीकी है, जैसे बिना तड़के की दाल। अपने हाईटेक जीपीएस, तीखी गपशप, और जासूसी स्किल्स के साथ ये लोग हर शादी को एक अनोखा तमाशा बना देते हैं। चाहे वेन्यू की माइक्रोस्कोपिक जांच हो, खाने की थाली का पोस्टमार्टम हो, या गिफ्ट की कीमत का हिसाब-किताब, ये हर मोर्चे पर बाजी मार लेते हैं। इनकी चटपटी टिप्पणियों और ठहाकों के बिना शादी का रंग-रूप अधूरा है। जैसा कि पुरानी कहावत को नया ट्विस्ट देना हो - शादी वो रंगमंच है, जहाँ दो लोग फेरे लेते हैं, और बाकी सब उनकी जिंदगी का लाइव कमेंट्री बॉक्स बनकर तालियाँ और सवाल बटोरते हैं। तो अगली बार शादी में जाएँ, अपने रिश्तेदारों का रडार चालू रखें, और इस धमाकेदार रियलिटी शो का पूरा मज़ा लें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आरक्षण: एक पुनर्विचार

वो वेदना जो सदियों से हृदय में जली,
न्याय की किरण बनी, आशा की ज्योति खिली।
वंचितों की आवाज़, टूटी हुई दीवार,
संविधान के पन्नों में लिखी सदियों की पुकार।

पर समय के साथ जब बदल गया स्वर,
कुछ को मिला अधिकार, कुछ रह गए अब दर-दर।
पीढ़ी दर पीढ़ी बन गई ये विरासत,
वास्तविक दुखी रहे, खो गई असली बात।

जाति की छाँव से अब छूटे नहीं सब,
धन-संपत्ति का फेर भी खड़ा अब तब।
क्या वह व्यवस्था जो न्याय दे सबको?
या बन गई वह एक छलावा, भ्रम का ढको?

आर्थिक आधार की जब बात उठती है,
समानता की लौ फिर जगमगाती है।
संसद करे जब पुनः विमर्श- विचार,
तभी बहेगी फिर से न्याय की धार।

नहीं चाहिए हमें केवल दिखावा न्याय का,
चाहिए वास्तविकता, सबका भाग्य आय का।
आरक्षण हो पुनः एक संवेदनशील गीत,
जहाँ हर वंचित को मिले जीवन की जीत।

(डॉ सत्यवान सौरभ)

भारत की शान तिरंगा।

हाथों में तिरंगा थाम,
हम अपने देश के बहुमान के लिए
तीनों सेनाओं का सम्मान करें,
क्योंकि भारत की शान तिरंगा है।

देश सर्वोपरि है और हमेशा रहेगा,
हमारी सीमाओं पर तिरंगा लहराता है
तभी सेना में जोश है,
क्योंकि भारत की शान तिरंगा है।

हमारी सेनाओं ने सिंदूर का पराक्रम बताया,
हम उनके इस शौर्य का गुणगान करें
हम भारतीय और यहाँ हमारी सेना है,
क्योंकि भारत की शान तिरंगा है।

मातृभूमि के लिए असंख्य हुए शहीद,
झुकने नहीं दिया जिन्होंने भारत का शीश।
वतन पर मर मिटने वालों के लिए हाथों में
थाम लें,
क्योंकि भारत की शान तिरंगा है॥

(हरिहर सिंह चौहान)

महान साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत की जयंती 20 मई पर विशेष...

सुमित्रानंदन पंत : प्रकृति का सुकुमार कवि, छायावादी युग का स्तंभ
साहित्य सृजन से लेकर स्वाधीनता आंदोलन के सेनानी, मानवतावादी दृष्टिकोण लोगों के लिए है प्रेरणा पुंज

-प्रदीप कुमार वर्मा

सुमित्रानंदन पंत आधुनिक हिंदी साहित्य में 'छायावादी युग' के श्रेष्ठ कवि थे। सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति के उपासक और प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करने वाले कवि के रूप में भी जाना जाता है। पंत को ऐसी कविताएँ लिखने की प्रेरणा उनकी अपनी जन्मभूमि उत्तराखंड से ही मिली। जन्म के छह-सात घंटे बाद ही माँ से बिछुड़ जाने के दुख ने पंत को प्रकृति के करीब ला दिया था। पंत ने सात वर्ष की अल्प आयु में ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। उनकी कविताओं में प्रकृति का सौन्दर्य चित्रण के साथ-साथ नारी चेतना और ग्रामीण जीवन की विसंगतियों का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता हैं। यही वजह है कि सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में भी जाना जाता है। यही नहीं पंत जी का साहित्य सज्जन आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय माना जाता है।

सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड राज्य बागेश्वर ज़िले के कौसानी में 20 मई 1900 को हुआ था। सुमित्रानंदन पंत के पिता कानाम गंगादत्त पंत और माता का नाम सरस्वती देवी था। यह विधाता की करनी ही थी कि पंत के जन्म के कुछ घंटो बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया। जिसके बाद उनका लालन-पोषण उनकी दादी ने किया। बचपन में उनका नाम गुसाईं दत्त था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी गांव से ही शुरू की। लेकिन हाई स्कूल के समय रामकथा के किरदार लक्ष्मण के व्यक्तित्व एवं लक्ष्मण के चरित्र से प्रभावित होकर उन्होंने अपना नाम गुसाई दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। हाई स्कूल के बाद वह वाराणसी आ गए और वहां के जयनारायण हाईस्कूल में शिक्षा प्राप्त की।

इसके बाद सुमित्रानंदन पंत वर्ष 1918 में इलाहबाद चले गए और 'म्योर कॉलेज' में बाहवीं कक्षा में दाखिला लिया। उस समय पूरे भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था। इलाहाबाद में पंत गांधी जी के संपर्क में आए। वर्ष 1921 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने म्योर कॉलेज को छोड़ दिया और आंदोलन में सक्रिय हो गए। इसके बाद वह घर पर रहकर स्वयंपाठी के रूप में हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करने लगे। इसके साथ ही सुमित्रानंदन पंत अपने जीवन में कई दार्शनिकों-चिंतकों के संपर्क में आए। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और श्रीअरविंद के प्रति उनकी अगाध आस्था

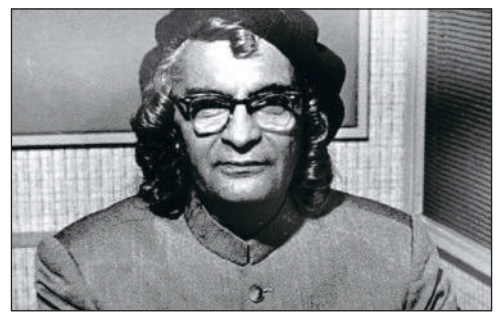

थी। वह अपने समकालीन कवियों सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और हरिवंशराय बच्चन से भी प्रभावित हुए।

पंत जी के साहित्य में प्रकृति का प्रमुखता से चित्रण मिलता है। इस संदर्भ में पता चलता है कि उनकी मां के स्वर्गवास के बाद प्रकृति की रमणीयता ने पंत जी के जीवन में माँ की कमी को न केवल पूरा किया, बल्कि अपनी ममता भरी छाँह में पंत जी के व्यक्तित्व का विकास किया। इसी कारण सुमित्रानंदन पंत जीवन-भर प्रकृति के विविध रूपों को प्रकृति के अनेक आयामों को अपनी कविताओं में उतारते रहे। यहां यह भी बताना उचित रहेगा की सत्य, शांति, अहिंसा, दया, क्षमा और करुणा जैसे मानवीय गुणों की चर्चा बौद्ध धर्म-दर्शन में प्रमुख रूप से होती है। इन मानवीय गुणों को पंत जी की कविताओं में भी देखा जा सकता है।

प्रकृति के प्रति प्रेम और मानवीय गुणों के प्रति झुकाव के चलते उनका लेखन इतना शशक्त और प्रभावशाली हो गया था कि वर्ष 1918 में महज 18 वर्ष की आयु में ही उन्होंने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली थी। उनका रचनाकाल वर्ष 1916 से 1977 तक लगभग 60 वर्षों तक रहा। इस दौरान उनकी काव्य यात्रा के तीन प्रमुख चरण देखने को मिलते हैं। इसमें प्रथम छायावाद, दूसरा प्रगतिवाद और तीसरा श्रीअरविंद दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवाद रहा हैं।

सुमित्रानंदन पंत का संपूर्ण जीवन हिंदी साहित्य की साधना में ही बीता। इस दौरान सुमित्रानंदन पंत द्वारा अनेक कालजयी रचनाओं का सृजन किया गया। इनमें ग्रन्थि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम आदि शामिल हैं। उनके जीवनकाल में उनकी 28 पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

हिंदी साहित्य की समग्र एवं समर्पित सेवा के लिए उन्हें वर्ष 1961 में पद्मभूषण, वर्ष 1968 में ज्ञानपीठ पुरष्कार के साथ-साथ साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से सम्मानित किया गया।

प्रियंका सेनापति से पुलिस गहन पूछताछ कर रही है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पुरी की प्रियंका सेनापति से पुलिस गहन पूछताछ कर रही है। आईएसआई जासूस ज्योति मालहोत्र से संबंधों को लेकर प्रियंका से गहन पूछताछ की जा रही है। ज्योति से उसकी मुलाकात कैसे हुई, उससे उसने कैसे संपर्क स्थापित किया, पुरी आते समय ज्योति किन-किन इलाकों में गई, क्या प्रियंका ने उसे कोई जानकारी दी, क्या ज्योति की गतिविधियां संदिग्ध थीं, क्या ज्योति ने जासूसी जैसा कोई संदिग्ध काम किया, क्या प्रियंका पाकिस्तान गई-क्या वह पाकिस्तान से आए किसी व्यक्ति से मिली, ऐसे कई सवाल प्रियंका से पूछे गए।पुरी पुलिस प्रियंका से ज्योति के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र कर रही है। ज्योति मल्होत्रा सितंबर 2024 को पुरी आए। प्रियंका ने उन्हें पुरी घुमाया। इस बीच प्रियंका का इंस्टाग्राम अकाउंट लॉक कर दिया गया है। यह स्पष्ट नहीं है कि उसने खुद को बंद किया या पुलिस ने उसे बंद किया।

पाकिस्तान के लिए जासूस के तौर पर काम कर रही हरियाणा की मशहूर यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा की गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने पुरी की प्रियंका से उसके संबंधों की जांच शुरू कर दी है। यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा की गिरफ्तारी के बाद पुरी के साथ उनके संबंधों को लेकर अटकलें बढ़ रही हैं। ज्योति पिछले साल सितंबर में पुरी घूमने आई थीं। उन्होंने पुरी समुद्र तट, मंदिर और अन्य स्थानों का दौरा किया। प्रियंका ने पुरी में कमांडर से दोस्ती भी कर ली। वह अपनी मित्र प्रियंका ज्योति के साथ पाकिस्तान की यात्रा कर चुकी हैं। प्रियंका और ज्योति के रिश्ते को लेकर भी संदेह बढ़ गया है। प्रियंका इससे पहले भी पाकिस्तान का दौरा कर चुकी हैं और वहां के कई वीडियो

सोशल मीडिया पर शेयर कर चुकी हैं। पुरी पुलिस ने इस संबंध में जांच शुरू कर दी है।

प्रियंका पुरी मंदिर के पास कालिकादेवी साही की रहने वाली हैं। प्रियंका के पिता राज किशोर साहबी ने कहा, मेरी बेटी ने केवल ऑनलाइन दोस्त बनाए थे और हम इस घटना की जांच में पुलिस के साथ सहयोग करेंगे। इसी तरह, विभिन्न मीडिया आउटलेट्स से ज्योति के बारे में जानने के बाद, प्रियंका ने अपने इंस्टाग्राम पर स्पष्टीकरण देते हुए लिखा, मैं ज्योति को यूट्यूब के माध्यम से जानती थी। मुझे उसके रिश्ते के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। मुझे पता था कि वह एक पाकिस्तानी जासूस के रूप में काम कर रहा था, लेकिन मैं कभी उसके संपर्क में नहीं आता।

सरायकेला जगन्नाथ मंदिर में "चको-डेरा" अनुष्ठान संपन्न, रथ पर लगे पहिए

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला: दशकों लम्बी अवधि के बाद सरायकेला में बन रहे रथ पर चकोडेरा नीति का आयोग संपन्न हुआ। भगवान जगन्नाथ महाप्रभु के रथ निर्माण पुरी धाम में उत्कलीय संस्कृति भंऊरी अवसर पर सरायकेला में भी पालन हुआ। रथ खलिहान में आवश्यक पूजा अर्चना के बाद प्रभू आदेश के साथ नये रथ के लकड़ी के ह्बिल व सफ्ट (पहिए पर धूस) लगाये गये।

चको-डेरा नामित इस अनुष्ठान का आयोजन स- समय पर संपन्न हुआ। जिस मां मंगला की आदेश के विना नये जगन्नाथ विग्रहों का निर्माण परिकल्पना तक नहीं होती, उन्ही मां मंगला की पूजा अर्चना के साथ विनिर्माण के प्रभू विश्वकर्मा कारिगरों जरिए आज रथ खड़ा करने का प्रथम सोपान विश्वकर्मा वंशज बढ़ाई कारिगरों ने की।

इस वर्ष सरायकेला में महाप्रभू जगन्नाथ के रथ यात्रा के लिए आठ पहियों वाला भव्य रथ का निर्माण किया जा रहा है। साथ ही रथ के पार्श देवी देवता एवं सारथी समेत घोड़ों का भी निर्माण अन्तिम पर्याय में है। आगामी आषाढ़ शुक्ल द्वितीया तिथि को मौसी गुड़िया के आंगन तक चतुर्धामूर्ति को लेकर यह यह रथ प्रस्थान करेगा। चकोडेरा अवसर पर श्री जगन्नाथ सेवा समिति के अध्यक्ष राजा सिंहदेव, राजेश मिश्रा, चंद्रशेखर कर, कोल्हू महापात्र, पार्थो दाश, लीपु मोहंती व दाशरथी परिच्छा समेत अन्य उपस्थित रहे

रेलवे वैगन में आग लग गई

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कोयला परिवहन करते समय एक रेलवे वैगन में आग लग गई। बेलपहाड़ में एक रेल गाड़ी में आग लग गई। अग्निशमन विभाग की गाड़ियां पहुंच गई हैं और आग पर काबू पा लिया गया है। ट्रेन फिलहाल बेलपहाड़ स्टेशन के पास रुकी हुई है।

एमसीएल की बेलपहाड़ खुली खदान वाली कोयला खदान से रेलवे वैगन में कोयला ले जाया जा रहा था। रात करीब साढ़े नौ बजे बेलपहाड़ में रेलवे वैगन में आग लग गई। दमकल विभाग की गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंची और आग पर काबू पाया। कोयले को बीओसीएम से रायपुर एनटीपीसी परियोजना तक ले जाया जा रहा था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023